• वर्ष ६५ • अंक १२ • मूल्य ₹२०

जून (द्वितीय) २०२३

पाक्षिक

परोपकारी

महर्षि दयानन्द सरस्वती

परोपकारिणी सभा एवं आर्यवीर दल जिला अजमेर के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 14 से 21 मई 2023 तक आयोजित आर्यवीर दल शिविर के दृश्य

यज्ञोपवीत ग्रहण करते आर्यवीर

यज्ञ करते आर्यवीर

उद्बोधन देते मुनि सत्यजित्
(मन्त्री-परोपकारिणी सभा, अजमेर)

लाठी चलाता आर्यवीर

महर्षि दयानन्द सरस्वती की
उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा
का मुखपत्र

ओ३म्

*विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षाः,
सत्यव्रता रहितमानमलापहाराः।
संसारदुःखदलनेन सुभूषिता ये,
धन्या नरा विहितकर्म परोपकाराः।।*

वर्ष : ६५ **अंक :** १२

दयानन्दाब्द: १९९

विक्रम संवत् - आषाढ़ कृष्ण २०८०

कलि संवत् - ५१२४

सृष्टि संवत् - १,९६,०८,५३,१२४

सम्पादक

डॉ. वेदपाल

प्रकाशक- परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर- ३०५००१

दूरभाष: ०१४५-२४६०१६४
०८८९०३१६९६१

मुद्रक-देवमुनि-भूदेव उपाध्याय
वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।

परोपकारी का शुल्क

भारत में

एक वर्ष-४०० रु.

पाँच वर्ष-१५०० रु.

आजीवन (२० वर्ष) -६००० रु.

एक प्रति - २०/- रु.

वैदिक पुस्तकालय : ०१४५-२४६०१२०
०७८७८३०३३८२

ऋषि उद्यान : ०१४५-२९४८६९८

RNI. No. ३९५९/५९

परोपकारी

जून द्वितीय, २०२३

अनुक्रम

०१. आर्यसमाज : लक्ष्य-उपलब्धि...	सम्पादकीय	०४
०२. क्या १२ फरवरी २०२३ ई. ऋषि...	डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री	०७
०३. आर्यसमाज और उसका इतिहास	प्रा. राजेन्द्र 'जिज्ञासु'	११
०४. वेद के राजनैतिक सिद्धान्त	पं. दीनानाथ	१५
०५. आदर्श शिक्षक	डॉ. जगदेव विद्यालङ्कार	१९
०६. अग्नि सूक्त-४६	डॉ. धर्मवीर	२२
०७. संस्था समाचार	श्री ज्ञानचन्द	२५
* परोपकारिणी सभा के आगामी शिविर व कार्यक्रम		२९
* परोपकारिणी सभा द्वारा प्रकाशित पुस्तकों पर विशेष छूट		३०
०८. संस्था की ओर से....		३१
* 'सत्यार्थ प्रकाश' प्रचार महायज्ञ में आपकी आहुति		३२
०९. पुस्तक-परिचय	देवमुनि	३३

www.paropkarinisabha.com
email : psabhaa@gmail.com

उपनिषद्, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाएँ
www.paropkarinisabha.com→gallery→videos

'परोपकारी' पत्रिका में प्रकाशित सभी आलेखों में व्यक्त विचार लेखकों के निजी हैं। इन्हें सम्पादकीय नीति नहीं समझा जाये। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।

आर्यसमाज : लक्ष्य-उपलब्धि-प्रासंगिकता एवं चुनौती

गताङ्क जून प्रथम से आगे

प्रासंगिकता- आर्यसमाज की स्थापना के समय की परिस्थितियों में पर्याप्त परिवर्तन हो चुका है। आर्यसमाज द्वारा प्रारम्भ किए गए अनेक कार्य (यथा बालविवाह निषेध, विधवा विवाह, अछूतोद्धार, स्त्री शिक्षा आदि) समाज द्वारा अंगीकृत किए जा चुके हैं अथवा सरकार द्वारा अपनी योजनाओं एवं प्राथमिकताओं में सम्मिलित कर लिए गए हैं। स्वराज्य प्राप्ति हो चुकी है एवं स्वदेशी वस्तुओं को भी सरकार द्वारा प्रोत्साहित किया जा रहा है। आर्यभाषा हिन्दी जिसे राजकार्य की भाषा बनवाने के लिए महर्षि ने अपने अनुयायियों को पत्र लिखकर पुन: पुन: प्रेरित किया कि वह अधिकाधिक हस्ताक्षर कराकर हण्टर कमीशन को भेजें। फलस्वरूप व्यापक हस्ताक्षर अभियान से हस्ताक्षरित प्रतिवेदन हण्टर कमीशन को दिए गए थे। उसे आज राजभाषा का स्थान प्राप्त है।

महर्षि चाहते थे कि विधवाओं की दशा सुधारने के लिए उनकी सन्तान को अपने पिता की स्थावर-जंगम सम्पत्ति में अधिकार प्राप्त हो। इससे अन्तत: पुनर्विवाह प्रचलित होगा। इसलिए २७ जुलाई १८८० में महर्षि ने मेरठ से राय मूलराज लाहौर को पत्र लिखकर कहा कि वह यथायोग्य नियम बनाकर महर्षि के पास भेज दें, जिसे वह अपने हस्ताक्षर कर सरकार के पास भेज सकें। उक्त सभी समस्याएँ देखने में प्रतीत होता है कि समाप्त हो चुकी हैं, किन्तु गम्भीरतापूर्वक विचार करने पर स्पष्ट हो जाता है कि इनमें अधिकांश समस्याएँ रूपान्तरित होकर आज भी सामाजिक एवं राष्ट्रीय जीवन को प्रभावित कर रही हैं।

धार्मिक क्षेत्र के वह बिन्दु यथा- ईश्वर के यथार्थस्वरूप का प्रतिपादन एवं साधारणजन को उसका बोध, वेद के ज्ञान का जनसाधारण को सुलभ होना अभी बहुत दूर दिखाई देते हैं।

पारिवारिक एवं सामाजिक दृष्टि से विवाह महत्त्वपूर्ण है। आज बालविवाह कानूनन प्रतिषिद्ध है, किन्तु देश के शैक्षणिक दृष्टि से पिछड़े क्षेत्रों में अभी भी यह कुप्रथा प्रचलन में है। दूरदराज की बात छोड़िए, राजस्थान, छत्तीसगढ़ जैसे राज्यों में आज भी यह कुप्रथा विद्यमान है। इस प्रकार के विवाह चुपचाप कर दिए जाते हैं। दस-बारह वर्ष के बच्चों के विवाह भी देखने में आ जाते हैं। कानूनन प्रतिषिद्ध होने पर भी प्रचलित रहना सामाजिक चेतना के अभाव का द्योतक है।

विवाह में बढ़ता दहेज का प्रचलन एवं वैभव का प्रदर्शन तथा बाद में वैवाहिक सम्बन्ध विच्छेद (तलाक) की बढ़ती प्रवृत्ति पारिवारिक संस्था के क्षरण का प्रमुख कारण है। इसी के साथ वर्तमान में 'लिव इन रिलेशन' में रहने को वैधता प्राप्त होने के साथ ही सहमतिपूर्वक स्थापित समलैंगिक सम्बन्धों को अपराध की श्रेणी से बाहर किया जाना एक नई कुरीति को मान्य किया जाना ही है। वर्तमान में समलैंगिकों के विवाह को मान्य किए जाने के लिए उच्चतम न्यायालय में विचार चल रहा है। इसके पक्ष-विपक्ष में महत्त्वपूर्ण वकील अपने तर्क प्रस्तुत कर रहे हैं।

वैज्ञानिक प्रगति के इस दौर में प्रकृति को संस्कृति में रूपान्तरित करना तो दूर उसे विकृति में परिवर्तित कर और वह भी कानून की दृष्टि में वैध बनाने के प्रयत्न किसी भी सभ्य समाज के लिए चिन्त्य हैं। इस अप्राकृतिक कृत्य को मानवाधिकार के नाम पर समर्थित करना मानवता का अवमूल्यन करना है। एक ऐसा सम्बन्ध जो अनेक रोगों का कारण बनकर मानवता के विनाश का कारण बन सकता है। इसके रोकने के प्रयत्न मानवता की रक्षा के लिए अत्यावश्यक हैं। विवाह संस्था

में जब तक इस प्रकार की कुरीतियाँ रहेंगी, तब तक आर्यसमाज की प्रासंगिकता बनी रहेगी।

सामाजिक दृष्टि से वर्णव्यवस्था (गुणकर्मानुसार) आज भी कहीं दिखाई नहीं देती है। जन्मना जाति प्रथा आज भी प्रतिष्ठित है। वोट की राजनीति इसे न केवल कायम रखना चाहती है, अपितु इस भाव को इतना प्रबल करने के लिए सचेष्ट है कि यह विभाजन स्पष्ट दिखाई दे। जातीय जनगणना कराये जाने के प्रयत्न वोट की दृष्टि से कुछ नेताओं के लिए फलप्रद हो सकते हैं, किन्तु सामाजिक स्वारस्य की दृष्टि से यह प्रयत्न विभेदकारी है। राजकीय सेवाओं एवं विधायिका में जन्मगत जाति के आधार पर प्राप्त होनेवाला आरक्षण भी जाति प्रथा को स्थायित्व दे रहा है। यद्यपि योग्य व्यक्ति भी इसी आरक्षण के मोह में जन्मना जाति को पकड़े ही दिखाई दे रहा है। इसके लिए सामाजिक चेतना को जागृत कर कर्म को प्रतिष्ठित करना कोई राजनीतिक दल करेगा, यह दूर की कौड़ी है। ईमानदार सामाजिक आन्दोलन ही और वह भी नैरन्तर्ययुक्त दीर्घकालिक होने पर ही स्यात् कुछ परिवर्तनक्षम हो। आर्यसमाज ने प्रारम्भिक पचास-साठ वर्षों तक जो चेतना जागृत की थी, वह आरक्षण के प्रभावी होते ही शनैः शनैः निष्प्रभावी होती चली गई। राजनैतिक परिस्थितियों के कारण अस्पृश्यता तो प्रत्यक्ष रूप में दिखाई नहीं देती, किन्तु गुणकर्मानुसारी वर्णव्यवस्थाजन्य स्नेह-सौहार्द का तो अभाव ही है।

धार्मिक क्षेत्र का महत्त्वपूर्ण बिन्दु है- ईश्वर। सामान्यतः सभी धार्मिक मत सम्प्रदायों की मान्यता है कि ईश्वर परम सत्ता है। जगत् का सृजन, पालन व संहार=प्रलय समय आने पर वही करता है। किन्तु ईश्वर के स्वरूप और उपासना के सम्बन्ध में इतना अधिक मतभेद है कि साम्प्रदायिक मतवैभिन्न्य का कारण भी यह मान्यताएँ रही हैं। महर्षि के समय के विभिन्न सम्प्रदाय एक-दूसरे के विरोधी बने हुए थे। पुराण वर्णित अनेक प्रसंग व घटनाएँ इसकी ज्ञापक हैं। शैव-वैष्णवों के पारस्परिक विवाद गृहकलह एवं विद्वेष की कहानी स्पष्ट बयान करते हैं। इस विषय में प्रमाण स्वरूप हिरण्यकशिपु और उनके पुत्र प्रह्लाद का पारस्परिक संवाद भी द्रष्टव्य है। इसी के साथ दूसरे सम्प्रदायस्थ व्यक्ति को किस दृष्टि से देखा जाए? यह भी उन वर्णनों से स्पष्ट हो जाता है। किन्तु आज यह सब काल्पनिक लगता है।

महर्षि ने सत्यार्थप्रकाश में और आर्यसमाज के विद्वानों ने अपने लेखों, एवं व्याख्यानों के द्वारा ईश्वर के यथार्थ स्वरूप का प्रतिपादन इतनी स्पष्टता और प्रबलता के साथ किया कि इससे पूर्व किसी ने इस ओर इतनी व्यापकता से प्रयत्न नहीं किया था। हिन्दू धर्म में शिव, विष्णु, गणेश आदि पृथक्शः ईश्वर के स्थानी माने जा रहे थे। महर्षि ने बलपूर्वक प्रतिपादित किया कि ईश्वर एक है, उसकी कोई आकृति या प्रतिमा-मूर्ति नहीं है। विष्णु आदि उसके गुणों का वर्णन करनेवाले शब्द हैं। इन्हें पृथक्-पृथक् ईश्वर मानना निराधार है। इस सबका ही प्रभाव है कि आज शैव-वैष्णव का भेद या विद्वेष उस प्रकार दिखाई नहीं देता है। यह सब शनैः शनैः प्रचार का ही परिणाम है।

वर्तमान समय में पूर्व प्रसिद्ध सम्प्रदायों का विभेद तो दिखाई नहीं देता, किन्तु आज ईश्वर के स्थान पर नए-नए उपास्य बनते जा रहे हैं। मन्दिरों में पूर्ववर्ती विग्रहों के साथ उनकी मूर्तियाँ भी स्थापित होने लगी हैं। उनके नाम से **भजन सन्ध्याएँ** भी आयोजित की जाने लगी हैं। जैसे साईं की मूर्तियाँ स्थापित की जा रही हैं और उसके नाम से-साईं भजन सन्ध्या का आयोजन स्थान-स्थान पर देखा जा सकता है। इसी प्रकार कुछ वर्ष पूर्व सन्तोषी माता के नाम से एक देवी के मन्दिर भी बने।

देवी-देवताओं को प्रसन्न करने के नाम पर पशुबलि अभी तक दी जा रही है। उत्तराखण्ड, असम, बंगाल में मेलों के अवसर पर इसे स्पष्ट देखा जा सकता है। आधुनिक विज्ञान के अध्यापक-अध्येता भी इस अन्धविश्वास से

मुक्त नहीं हैं। एक प्रमुख राजनेता जो प्रख्यात विश्वविद्यालय में विज्ञान के प्रोफेसर रहे हैं, जब राजनीतिक यात्रा प्रारम्भ करते हैं, तब सर्वप्रथम बलि दी जाती है। इस अविद्या को दूर करने का प्रयत्न कोई धार्मिक संगठन नहीं करता है। अब नए-नए मन्दिरों का निर्माण तो हो रहा है, किन्तु मनुष्य के मन में ईश्वर के प्रति भय और कर्त्तव्य एवं दायित्व के प्रति समर्पण की मात्रा तो कम ही दिखाई देती है। दिखाई देता है, तो धर्माचरण का दिखावा। यदि धर्म की स्थापना व्यक्ति के जीवन में हो जाती, तो क्या नैतिकता का इतना ह्रास सम्भव था?

वेद ग्रन्थ रूप में तो सुलभ हैं, किन्तु वैदिक ज्ञान का प्रसार सरल भाषा में जनसाधारण को सुलभ नहीं है। वेद में देवता से क्या अभिप्राय है? जनसामान्य तो दूर, अपने को सुपठित मानने वाले भी इस से अनजान हैं। इन्द्रादि देवों के सम्बन्ध में पठित समाज में जो धारणा बनी हुई है, उसका कोई वैदिक आधार नहीं है, अपितु मध्यकालीन भाष्यकारों के मत भी पौराणिक आख्यानों पर आधृत हैं। उसका यथार्थ क्या है? यह जानने और जनाने के प्रयत्न दृष्टिगोचर नहीं हो रहे हैं। इन्टरनेट के युग में देवों का चित्रण विद्रूपतापूर्ण ढंग से सुनियोजित रूप में किया जा रहा है। वेदवाद मानने वाले हिन्दू समाज के धर्माचार्यों, कर्णधारों की उदासीनता नई पीढ़ी को संस्कृति-विमुख होने का कारण बन रही है। इस स्थिति में आर्यसमाज की प्रासंगिकता पूर्व की अपेक्षा अधिक है। वेद में उपलब्ध 'गंगा' आदि पद क्या गंगोत्री से निकल कर गंगा सागर तक जाने वाली नदी विशेष के वाचक हैं अथवा किसी अन्य के? वैयक्तिक, पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन के वैदिक सूत्र क्या हैं? अथवा वर्तमान समस्याओं के प्रति वैदिक दृष्टिकोण क्या है? यह आज भी प्रासंगिक है। इन सब विषयों पर जानकारी आज भी सहज सुलभ नहीं है। महर्षि ने वेद के पठन-पाठन तथा श्रवण-श्रावण को परम धर्म क्यों कहा है? यह जब तक जन-जन तक नहीं पहुँचता है, तब तक आर्यसमाज की प्रासंगिकता बनी ही रहेगी।

क्रमशः

डॉ. वेदपाल

गुरुकुल प्रवेश सूचना

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल, ऋषिउद्यान, अजमेर में संस्कृत भाषा, पाणिनीय व्याकरण, वैदिक दर्शन, उपनिषदादि के अध्ययन हेतु प्रवेश आरम्भ किये गए हैं। इन्हें पढ़कर वैदिक विद्वान्, उपदेशक, प्रचारक बन सकते हैं। कम से कम दसवीं कक्षा उत्तीर्ण १६ वर्ष से बड़े युवकों को प्रवेश मिल सकता है। प्रवेशार्थी को पहले ३ माह का अस्थाई प्रवेश दिया जाएगा। इस काल में अध्ययन व अनुशासन में सन्तोषजनक स्थिति वाले युवकों को ही स्थाई प्रवेश दिया जाएगा। सम्पूर्ण व्यवस्था नि:शुल्क है। गुरुकुल में अध्ययन के काल में किसी भी बाहर की परीक्षा को नहीं दिलवाया जाएगा, न उसकी अनुमति रहेगी। प्रवेश व अधिक जानकारी के लिए-

चलभाष : ७०१४४४७०४० पर सम्पर्क कर सकते हैं। सम्पर्क समय- अपराह्न ३.३० से ४.३०।

वृष्टि यज्ञ

सभी आर्यजनों के लिए अत्यन्त हर्ष का विषय है कि जीव सेवा समिति अजमेर और परोपकारिणी सभा अजमेर के संयुक्त तत्त्वाधान में स्वामी हृदयराम जी की प्रेरणा से लगभग ३५ वर्षों से चला आ रहा वृष्टि यज्ञ, प्रत्येक वर्ष की भाति इस वर्ष भी ३० जून से ऋषि उद्यान की यज्ञशाला में आरंभ हो रहा है।

ऋषि दयानन्द-द्विजन्मशताब्दी लेखमाला-(२)

[स्वाध्याय-शोध और समीक्षा]

क्या १२ फरवरी २०२३ ई. ऋषि दयानन्द की २००वीं जयन्ती है?

डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री

प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी ने ऋषि दयानन्द की जयन्ती (अंग्रेजी तारीख के अनुसार) के शुभ अवसर पर महर्षि दयानन्द की शिक्षाओं, उपकारों और उल्लेखनीय सेवाओं का मुक्तकण्ठ से बखान करते हुए ऐतिहासिक व्याख्यान दिया, जिसकी जितनी भी प्रशंसा की जाए कम ही है। विगत वर्ष २०२२ ई. के १५ अगस्त को स्वतन्त्रता दिवस पर अपने भाषण में ऋषि दयानन्द का उल्लेख मात्र भी न करने से आर्यजनता में फैली उद्विग्नता दूर हो गई।

ऋषि दयानन्द की प्रथम जन्मशताब्दी मथुरा नगरी में सभी आर्यों के समर्थन से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नेतृत्व में फाल्गुन कृष्ण ७ सप्तमी से १३ त्रयोदशी १९८१ वि. संवत् तदनुसार १५ फरवरी से २१ फरवरी १९२५ ई. तक मनाई गई थी। उस समय सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी श्रद्धानन्द जी तथा कार्यकर्त्ता प्रधान महात्मा नारायण स्वामी जी थे। सार्वदेशिक सभा का मन्त्री पद श्री डॉ. केशवदेव शास्त्री एम.डी. के अधीन था। इस अवसर पर प्रकाशित 'श्रीमद्दयानन्द जन्मशताब्दी वृत्तान्त' में कुल २४४ पृष्ठ थे। 'परिशिष्ट' में 'क' से लेकर 'ज' तक ८ पृष्ठ और जोड़े गये थे। टाईटल के आदिम और अन्तिम पन्नों के ४ पृष्ठ भी थे। डॉ. केशवदेव शास्त्री, मन्त्री, सार्वदेशिक सभा द्वारा सम्पादित और संगृहीत इस 'विवरणिका' के पृष्ठ ३ पर लिखा है- ''भगवान् दयानन्द सरस्वती का जन्म काठियावाड़ अन्तर्गत मौरवी राज्य के टंकारा नामी ग्राम में १८२५ ई. में हुआ था। शिवरात्रि १९२५ में जन्म शताब्दी का दिवस निर्धारित किया गया। इसी दिवस को मनाने के लिए अनुमान दो वर्ष पूर्व से ही तैयारी होने लगी थी।''

इसी प्रकार १९७५ ई. आर्यसमाज की स्थापना शताब्दी मनाने से दो वर्ष पूर्व १९७३ तथा १९७४ ई. में ही स्थापना शताब्दी समारोह का उपक्रम प्रारम्भ हो गया था। आर्य प्रतिनिधि सभा (उ.प्र.) के यशस्वी प्रधान श्री प्रकाशवीर शास्त्री के नेतृत्व में बहुत ही धूमधाम से १९७३ ई. में मेरठ नगर में तथा १९७४ ई. कानपुर नगर में शताब्दी समारोह मनाया गया, जिसमें पूरे देश के आर्य विद्वान्, आर्यजनता तथा सार्वदेशिक सभा के अधिकारी भी सोल्लास सम्मिलित हुए। अतः ऋषि दयानन्द की २००वीं जयन्ती वर्ष २०२५ ई. में पूर्ण होने के उपलक्ष्य में दो वर्ष पूर्व २०२३ ई. में द्वि जन्मशताब्दी समारोह का उपक्रम समुचित ही है। गलती यह हुई है कि इस अवसर पर प्रकाशित 'लोगो' (Logo) में आंग्ल (रोमन) अंक में '1824-2024' लिखा है। लोगो (Logo) की शेष संरचना सुरुचिपूर्ण है। २०० के शून्यों में मंदिर हरी पत्तियाँ तथा यज्ञकुण्ड है तथा पृष्ठभूमि में स्वामी दयानन्द सरस्वती का चित्र है। यज्ञकुण्ड की नीचे की पट्टिका में 'सदैव सत्य' लिखा है जो श्री विनय आर्य (महामन्त्री-'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा') की ऊहा प्रतीत होती है। किन्तु ईसवीय जन्म वर्ष का गलत उल्लेख करने से सम्पूर्ण आर्यजगत् में भ्रम या भ्रान्ति का वातावरण बन गया है। ऋषिवर दयानन्द लिखते हैं-''क्योंकि थोड़ा सा भी असत्य हो जाने से सम्पूर्ण निर्दोष कृत्य बिगड़ जाता है।''

['ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन', (भाग-२) पृ. ६९५, तृतीय संस्करण, १९८१ ई., प्रकाशक-रामलाल कपूर ट्रस्ट, बहालगढ़ सोनीपत-हरियाणा]

(क) सार्वदेशिक सभा के निर्णय की अवहेलना- इस प्रकार १८२४-२०२४ ई. का उल्लेख ऋषि दयानन्द की द्विजन्मशताब्दी के सन्दर्भ में करना

'सभा' के वर्तमान अधिकारियों की अज्ञानता का सूचक है। २०२२ ई. के जून मास के प्रथम सप्ताह में पाणिनि कन्या महाविद्यालय वाराणसी का स्वर्ण जयन्ती समारोह था उस अवसर पर 'सार्वदेशिक सभा' के माननीय प्रधान श्री सुरेशचन्द्र जी आर्य (अहमदाबाद) आये थे। वहीं मैंने विस्तार से ऋषि दयानन्द की जन्मतिथि तथा सार्वदेशिक धर्मार्य सभा तथा सार्वदेशिक अन्तरंग सभा के निर्णय की जानकारी दे दी थी। तब उन्होंने यह कहा था कि २०२५ ई. ऋषि के जन्मदिवस को २०० वर्ष पूरे होंगे, किन्तु २००वाँ जन्मदिन तो २०२४ ई. में ही हो जाएगा, अत: २०२४ ई. में ऋषि की २००वीं जयन्ती मनाने में कोई हर्ज नहीं है। किन्तु यहाँ उन्होंने और उनकी सभा ने १२ फरवरी २०२३ ई. को ही ऋषि दयानन्द की २००वीं जयन्ती मना ली और ऋषि की जयन्ती का उल्लेख '१८२४-२०२४' लिखकर प्रचारित-प्रसारित कर दिया।

मैंने २८ सितम्बर २०२२ ई. को प्रात:काल लगभग ९:०० बजे से १०:०० बजे तक एक घण्टे की लम्बी वार्ता में (दूरभाष पर) श्री विनय आर्य को ऋषि दयानन्द की जन्मतिथि के साथ-साथ स्वामी श्रद्धानन्द तथा महात्मा नारायण स्वामी के जन्म वर्षों की वास्तविकता से पूरी तरह अवगत करा दिया था। पुनरपि जन्मवर्ष का गलत उल्लेख सकल आर्यजनों में भ्रमोत्पादक हो गया। इस घटना के पश्चात् पचासों फोन मेरे पास देश-विदेश से आये, मैं सबको स्पष्टीकरण देता रहा, किन्तु क्या मेरा स्पष्टीकरण वह भी दूरभाष पर, क्या प्रभावी हो सकता है? अत: 'लेखमाला' लिखकर आर्यजनता के समक्ष सही स्थिति स्पष्ट कर रहा हूँ। इसके लिए 'पद्मश्री' से विभूषिता बहिन सुकामा जी आचार्या, पं. महेश विद्यालंकार से अभिप्रेरित आचार्य भद्रकाम वर्णी, श्री संजय सत्यार्थी (पटना), श्री चन्द्रकान्त जी, श्री राजेश सेठी (मेरठ) इत्यादि महानुभावों से प्रेरित होकर परोपकारी के सम्मानीय सम्पादक विद्वद्वर्य डॉ. वेदपाल जी से मैंने अनुरोध किया है कि ऋषि दयानन्द की जीवनी से सम्बन्धित अनेक तथ्यों के उद्घाटनार्थ 'ऋषि दयानन्द द्विजन्मशताब्दी लेखमाला' का प्रकाशन सत्य-सत्य तथ्य के प्रकाशनार्थ चाहता हूँ, किसी भी व्यक्ति विशेष या 'सभा' की अवमानना करने का लेशमात्र भी प्रयोजन नहीं है। 'सदैव सत्य' तथा ऋषि दयानन्द का पूर्वोद्धृत वाक्य- 'थोड़ा सा भी असत्य हो जाने से सम्पूर्ण निर्दोष कृत्य बिगड़ जाता है।' ही मेरे दृष्टिपथ पर है, अन्य कुछ भी नहीं।

(ख) स्वामी आर्यवेश भी चूक गये- श्री विनय आर्य महामन्त्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रचारित/प्रसारित 'लोगो' (Logo) की अनुकृति में स्वामी आर्यवेश जी के नेतृत्व तथा निर्देशन में सम्पादित 'वैदिक सार्वदेशिक' के अंकों में इसी सम्बन्ध में जो 'लोगो' (Logo) प्रकाशित वा प्रसारित हुई है, उसमें सब कुछ वही है जो श्री विनय आर्य ने प्रकाशित/प्रचारित/प्रसारित किया है। स्वामी आर्यवेश जी ने भी '२००' अंकों के शून्य में हरी पत्तियाँ, मन्दिर तथा यज्ञकुण्ड के चित्र दर्शाये हैं। 'महर्षि दयानन्द सरस्वती जयन्ती' शब्दों के अन्तर्गत 'जयन्ती' के नीचे '१८२४-२०२४' ही रोमन अंकों में लिखा है। भेद केवल इतना है कि पृष्ठभूमि में ऋषि दयानन्द का चित्र न होकर अंकों (२००) के वाम पार्श्व में 'ओ३म्' की ध्वजा हाथ में लिए ऋषि दयानन्द का पूर्ण (खड़े हुए) चित्र है। यज्ञकुण्ड की नीचे की पट्टिका में 'सदैव सत्य' के स्थान पर 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' अंकित है। इस प्रकार '१८२४-२०२४' का उल्लेख करके आर्यवेश जी ने भी वही गलती दुहराई है जो श्री विनय आर्य जी ने की थी।

(ग) 'सार्वदेशिक धर्मार्य्य सभा' का समापन- सन् १९४७ ई. में 'महात्मा नारायण स्वामी जी' का देहान्त हुआ और १९६० ई. में 'पण्डित इन्द्र विद्यावाचस्पति' का। ये दोनों आर्य-मनीषी 'सार्वदेशिक सभा' के प्रधान रहे थे। पं. इन्द्र जी के कार्यकाल में सार्वदेशिक सभा ने 'धर्मार्य सभा' गठित की थी। जो बहुत वर्षों तक कार्यरत रही। स्वामी आनन्दबोध सरस्वती (श्री रामगोपाल शालवाले) के कार्यकाल में 'धर्मार्य सभा' का व्यापक स्वरूप तो समाप्त हो गया किन्तु 'सभा'

ने अपने को 'समिति' के रूप में जीवित रखा। 'सभा' की सदस्य संख्या २०-२१ थी, 'समिति' में ५ लोग सीमित हो गये। 'सभा' में 'प्रधान' और 'मन्त्री' पद था। 'समिति' में मात्र एक संयोजक का पद रहा, जिस पर आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री, पं. रामानन्द शास्त्री, डॉ. शिवकुमार शास्त्री, डॉ. योगेन्द्र कुमार शास्त्री (जम्मू) तथा डॉ. भवानीलाल भारतीय जी क्रमशः विराजमान रहे। स्वामी आनन्दबोध जी के देहान्त के बाद 'समिति' भी विसर्जित हो गई। 'सार्वदेशिक सभा' या 'प्रान्तीय सभाओं' का प्रत्यक्ष रूप से कोई भी सम्बन्ध आर्यविद्वानों के साथ नहीं है और न सभा के अधिकारी ही किन्हीं महत्त्वपूर्ण विषयों पर आर्यविद्वानों की सम्मति या 'धर्मार्य सभा' द्वारा निर्णीत तथ्यों के आलोक में कोई काम करते हैं। यदि 'धर्मार्य सभा' या 'धर्मार्य समिति' जीवित रहती तो इतनी बड़ी चूक 'सार्वदेशिक सभा' के अधिकारियों द्वारा नहीं होती। **'अप्रियस्य च पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः।'**

(घ) ऋषि दयानन्द की जीवनी का प्रकाशन- 'ऋषिद्विजन्मशताब्दी' को अभिलक्ष्य करके ऋषि दयानन्द का जीवन चरित्र भारी संख्या में प्रकाशित करना चाहिए। भारत की सभी भाषाओं के साथ विदेशी भाषाओं (अंग्रेजी, जर्मन, फ्रेंच, रुसी, उर्दू, चीनी, अरबी आदि) में भी ऋषिवर की जीवनी प्रकाशित करने का कार्य सार्वदेशिक, प्रान्तीय तथा विदेश में कार्यरत आर्यसमाजों की संस्थाओं का यह दायित्व है। जन-समुदाय में से थोड़े ही लोग होंगे, जो अपनी-अपनी भाषाओं में प्रकाशित ऋषि की जीवनी क्रय करेंगे। अतः हमें ऋषिवर की जीवनी को लाखों की संख्या में सप्रेम भेंट, वितरण करना होगा। इस कार्य के लिए मैं दो वर्षों पूर्व से ही अनेक आर्यसज्जनों तथा संस्थाओं को प्रेरित कर रहा हूँ। इसी कड़ी में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के माननीय मन्त्री श्री विनय आर्य ने मेरे सुझाव के अनुसार स्वामी श्रद्धानन्द के सुपुत्र यशस्वी आर्य लेखक तथा सार्वदेशिक सभा के पूर्व प्रधान श्री पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति लिखित 'ऋषि जीवन-चरित्र' को प्रकाशित करने का निर्णय लिया। एतदर्थ मुझे सम्पादन का दायित्व भी सौंपा, परन्तु खेद है कि मेरे सम्पादित कार्य के अनुरूप पुस्तक नहीं छपी। मैंने रात-दिन परिश्रम करके पुस्तक की प्रूफ देखी थी। छपने पर पुस्तक का अवलोकन करने पर विदित हुआ कि यद्यपि सम्पादक के रूप में मेरा नाम प्रकाशित किया गया है, किन्तु मेरे द्वारा संशोधित तथ्यों के अनुरूप न छपकर त्रुटिपूर्ण पुस्तक प्रकाश में आई। यद्यपि इसके लिए प्रत्यक्षतः महामन्त्री श्री विनय जी उत्तरदायी नहीं हैं, लेकिन कार्यालयीय कर्मचारी वा मुद्रक अवश्यमेव जिम्मेदार हैं। पुस्तक 'महर्षि दयानन्द' छपने पर जिन हाथों में पुस्तक गई उनमें से अनेक ने मुझसे दूरभाष पर पूछा कि जिन मान्यताओं को मैं या सार्वदेशिक सभा मानती है तदनुरूप पुस्तक न छपने का कारण क्या है? मैं उन आर्य-मनीषियों को क्या उत्तर दूँ? अतः 'लेखमाला' की इस शृंखला में उन अशुद्धियों को शुद्ध करके प्रस्तुत करता हूँ-

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
९	४	----	तदनुसार १२ फरवरी १८२५
९	५	अम्बाशंकर	लालजी कर्षन जी तिवारी
१०	१३	१४ वर्ष की आयु तक	१४वें वर्ष के आरम्भ में ही
७४	१२	१० अप्रैल	७ अप्रैल

यहाँ विशेष अशुद्धियों को ही प्रदर्शित किया गया है। मैंने इस पुस्तक के 'सम्पादकीय' में जो लिखा था, उन कतिपय आवश्यक पंक्तियों को उद्धृत करके इस 'लेखमाला' द्वितीय कड़ी को समाप्त कर रहा हूँ-

"...महर्षि दयानन्द की २००वीं जयन्ती १२ फरवरी [फाल्गुन कृष्ण पक्ष दशमी, २०८० विक्रम संवत् को ही ऋषि दयानन्द की २००वीं जयन्ती मनानी चाहिए-ज्वलन्त शास्त्री] २०२४ ई. को मनाई जाएगी तथा उनके इस धराधाम पर अवतीर्ण हुए २०० वर्ष फाल्गुन कृष्ण-१०, विक्रम संवत् २०८१ को पूरे हो जायेंगे। महर्षि दयानन्द की प्रथम जन्मशताब्दी फरवरी मास [१५ फरवरी से २१ फरवरी १९२५ ई. तक अर्थात् १९८१ विक्रम संवत् के

फाल्गुन मास में कृष्ण पक्ष की सप्तमी से त्रयोदशी तक] में १९२५ ई. में मथुरा में स्वामी श्रद्धानन्द तथा महात्मा नारायण स्वामी के नेतृत्व में मनाई गई थी।...आर्यसमाज के यशस्वी चिन्तक तथा मनीषी निर्देशक श्री पं. इन्द्रजी विद्यावाचस्पति द्वारा लिखित इस जीवनी को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए हर्ष और आत्मिक आनन्द का होना स्वाभाविक है। इन्द्र जी ने महर्षि दयानन्द की यह जीवनी १९२७ ई. में लिखी थी। भाषा-भाव में प्राञ्जलता तथा प्रभावोत्पादकता इन्द्रजी की लेखकीय कुशलता के प्राण तत्त्व थे। उस समय तक पं. देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय का विस्तृत अनुसन्धानपूर्ण ऋषि दयानन्द-चरित प्रकाशित नहीं हो पाया था। अतः कुछ इतिहासगत संशोधन पं. इन्द्रजी की इस कृति में करने आवश्यक थे। मुद्रण की कुछ त्रुटियाँ भी थीं। 'सार्वदेशिक सभा' तथा सार्वदेशिक धर्मार्य सभा के निर्णय भी कुछ विषयों पर १९४० ई. १९६० ई. तथा १९६७ ई. में हुए। इन्द्रजी स्वयं सार्वदेशिक सभा के 'प्रधान' थे। अतः इन निर्णयों को संयोजित करते हुए तथा मुद्रणजन्य त्रुटियों को दूर करके शुद्ध तथा स्वच्छ रूप में इसे प्रस्तुत किया जा रहा है। आशा है, आर्यजनता तथा विशाल पाठक समुदाय महर्षि दयानन्द की क्रान्तिकारी जीवनी को पढ़कर राष्ट्रीय और वैश्विक परिवेश महर्षि दयानन्द से प्रेरणा प्राप्त करेगा।''

इतना सबकुछ 'सम्पादकीय' में स्पष्ट लिखने के बावजूद पुस्तक के मुखपृष्ठ पर महर्षि दयानन्द के चित्र के नीचे ''२००वीं जयन्ती १८२४-२०२४'' लिखा गया, साथ ही प्रत्येक पृष्ठ पर ''महर्षि दयानन्द २००वीं जयन्ती'' प्रकाशित किया गया। अस्तु

मैंने इस 'लेखमाला' की द्वितीय कड़ी में वस्तुस्थिति स्पष्ट कर दी है। 'अलमतिविस्तेरण बुद्धिमद्वर्येषु।' 'लेखमाला' की अगली कुछ कड़ियों का शीर्षक रहेगा। १. २० सितम्बर १८२५ ई. ऋषि की जन्मतिथि नहीं हो सकती २. ऋषि दयानन्द की तथाकथित 'अज्ञात जीवनी' मिथ्या जालग्रन्थ है। ३. ऋषि दयानन्द की उल्लेखनीय जीवनियाँ।

श्री विनय आर्य (महामन्त्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा) द्वारा प्रचारित तथा प्रसारित 'लोगो' (Logo) -

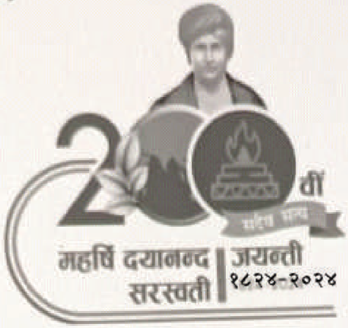

श्री स्वामी आर्यवेश जी द्वारा प्रचारित तथा प्रसारित 'लोगो' (Logo) -

मेरे इस लेख में की गयी विवेचना से यह सुस्पष्ट हो जाता है कि उपर्युक्त दोनों 'लोगो' (Logo) में त्रुटियां हैं, अतः इन त्रुटियों को दूर करके सर्वथा शुद्ध तथा समीचीन 'लोगो' (Logo) का स्वरूप इस प्रकार का होगा -

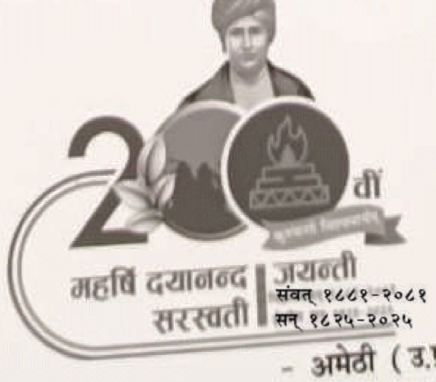

- अमेठी (उ.प्र.)

मो.-7303474301

आर्यसमाज और उसका इतिहास

प्रा. राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

आर्यसमाज को जन्मकाल से ही कई अद्‌भुत और महान् इतिहास निर्माता विभूतियों का नेतृत्व प्राप्त हुआ। उनमें से कई बहुत गुणी इतिहास मर्मज्ञ तथा इतिहासकार के रूप में ख्याति प्राप्त हुये हैं। यहाँ उनके नाम गिनाने की आवश्यकता नहीं है। इतिहास लेखन की आवश्यकता क्या है? इसे अत्यन्त सरल तथा प्रेरक शब्दों में इन दिनों आर्यसमाज के यशस्वी प्रकाशक श्री अजय आर्य ने 'आर्यसमाज का इतिहास' ग्रन्थमाला के प्रकाशकीय में यथार्थ ही लिखा है।

एक विश्व प्रसिद्ध भारतीय इतिहासकार ने इतिहास की महिमा के विषय में अत्यन्त सुन्दर शब्दों में लिखा है, ''Nation live on their past, in their present, for their future.'' अर्थात् जातियाँ अपने अतीत पर जीवित रहती हैं, वर्तमान में जीती हैं और भविष्य में जीने के लिये जीती हैं।

वर्तमान काल में आर्यसमाज में इतिहास परक लिखने की बहुतों की चाहना रहती है, परन्तु इतिहास लिखने के लिये केवल कुछ नाम रट लेना और अपनी मनपसन्द कहानी गढ़कर लिख देने का नाम इतिहास शास्त्र नहीं। यहाँ आज किसी के लेखक व पुस्तक पर मुझे कुछ नहीं लिखना। आर्यसमाज और उसके इतिहास की रक्षा के लिये कुछ ठोस सुझाव देने हैं।

हाँ! यह तो बड़े भाग्य की बात है कि इस गये बीते काल में कुछ विचारशील सुयोग्य युवक सैद्धान्तिक साहित्य तथा ठोस प्रेरणाप्रद इतिहास सम्बन्धी साहित्य लिखनेवाले सोत्साह मैदान में उतर रहे हैं। किसी सभा के पास भले ही आज पं. धर्मभिक्षु, पं. रामचन्द्र देहलवी, पं. शान्तिप्रकाश, पं. निरञ्जनदेव इतिहास केसरी जैसा एक भी विद्वान् नहीं है। टी.वी. में, पत्र-पत्रिकाओं में सनातन धर्म की राजनेता बहुत रट लगाते रहते हैं, परन्तु हनुमान चालीसा से आगे-पीछे का वेद, उपनिषद्, दर्शन शास्त्रों तो क्या उनमें से कोई ईश्वर और उसकी उपासना की बात ही नहीं करता? क्या आर्यसमाज की किसी सभा और किसी नेता ने इस विषय में कुछ लिखा व कहा?

इतना तो पूछा होता, **''हिन्दुओं के भगवान् कितने हैं?''** सनातन धर्म के उपास्यों की एक अधूरी सी सूची तो कोई माँगता।

हम वही हैं क्या?- हम वही हैं क्या जिनके आचार्य महर्षि दयानन्द के जीवन, सिद्धान्तों और उपलब्धियों पर अमेरिका में सबसे पहला लेख चित्र सहित छपा था?

हम वही तो हैं कि इंग्लैण्ड का राजनियम बदलकर एक निर्धन चाकर चन्दनसिंह ब्राह्मण के शव का दाहकर्म करके नया इतिहास रचा। **उसके शव की शोभायात्रा में गोरे खिंचकर आये।**

अजी! हम वही हैं, इंग्लैण्ड के एक पत्रकार ने आर्यसमाज की धाक जमाते हुये वहाँ आर्यनेता श्री महाशय कृष्ण जी पर इस शीर्षक से एक लेख लिखा ''A fiery Editor of Lahore.'' लाहौर का एक आग्नेय सम्पादक।

हम वही तो हैं कि हमारे एक मूर्धन्य विद्वान् ने अमेरिका में **'नमस्ते अभिवादन'** की धूम मचा दी।

हम वही तो हैं कि अमेरिका में आर्यसमाज की स्थापना के थोड़ा समय पश्चात् ऋषि दयानन्द पर प्रकाशित पहले ही लेख में यह छपा था कि इस महात्मा को आर्यसमाज के लिये न तो सरकार का संरक्षण चाहिये और न ही सरकार का सहयोग। आर्यसमाज की स्थापना के पावन दिवस पर किसी भी छोटे बड़े **सरकारी अधिकारी को ऋषि ने निमन्त्रण ही न दिया।**

अब जो राजनेता ऋषि दयानन्द जी का, वेद का,

उपनिषद् एकेश्वरवाद का उल्लेख करने से डरते हैं, उनके साथ फोटो खिंचवाने के लोभ से कुछ नामधारी आर्य लोग उनके आगे-पीछे घूमते हैं। गुरुकुल के एक स्नातक को सोनिया गांधी के गीत गाते आर्यसमाज में सुना गया। नई सरकार के आते वह पलटूराम बनकर और बोली बोलने लग गया।

आर्यसमाज के इतिहास की विलुप्त होती बेजोड़ स्वर्णिम घटनाओं को खोज-खोज कर पिछले ६० वर्षों में मैंने एक कीर्तिमान बनाया। मैंने मौलाना अब्दुल अजीज़ की कोटि के उच्च अधिकारी की ऋषि के बलिदान के समय शुद्धि की ऐतिहासिक घटना खोजकर सप्रमाण प्रकाशित करवाई। इतिहासपरक लेख लिखने के किसी रसिक ने न कभी उस पर फिर लेख लिखा न ही भाषण दिया, मुझे उसी के निकट के रिश्तेदार विश्व प्रसिद्ध भारतीय वैज्ञानिक श्री सतीश धवन जी का तब सन्देश मिला कि मेरे दादा आर्यनेता श्री ठाकुरदत्त धवन की जीवनी आप लिख दें। प्रकाशन की राशि मैं दे दूँगा। मैंने उन्हें सन्देश भिजवाया कि उनकी जीवनी कुछ कार्य निपटाकर लिखूँगा। उन पर जो लिखा जा चुका है उसका लाभ पहुँचाने का उद्यम तथा सहयोग कीजिये।

यह प्रसंग परोपकारी में प्रकाशित हो गया। आर्यसमाजी इस जानकारी को प्रचारित करके आर्यसमाज की शोभा न बढ़ा सके। मौलाना अब्दुल अजीज ऋषि के जीवनकाल में आर्यसमाज की ओर खिंचे। इसका श्रेय पूज्य पं. लेखराम जी को प्राप्त है। यह मैंने सप्रमाण अपने कई ग्रन्थों में लिखा। आर्यसमाज में इतनी बड़ी घटना का प्रचार कहाँ? किसने किया? एक डॉ. वेदपाल जी तथा दो-चार सज्जनों ने इस पर गम्भीरता से विचार किया।

आर्यसमाज के इतिहास की रक्षा, उसके लेखन, प्रचार और विलक्षणता के प्रसार के लिये योजनाबद्ध लहर चलाने की संगठन की चिन्ता ही नहीं। उपहासकार यही डींग मारते रहे कि ऋषि जी द्वारा सबसे पहले मुहम्मद उमर जी को शुद्ध किया गया फिर किसे शुद्ध किया गया? मैंने बार-बार लिखा कि अब्दुल अजीज की शुद्धि लाहौर तथा अजमेर दोनों नगरों में की गई फिर भी आर्यसमाज इस ऐतिहासिक घटना का प्रचार कर नई पीढ़ी में जोश न भर सका। स्वामी दर्शनानन्द इस शुद्धि के प्रबल समर्थक थे और उनके पिता पं. रामप्रताप आर्यसमाज के विरोध में थे। सनातन धर्म की रट आज लगाने वाले बहुत नेता हैं। कोई प्रमुख सनातन धर्मी आर्यसमाज के पक्ष में तब आगे न आया। व्यक्तिगत रूप में अमृतसर के कई सनातन धर्मी आर्यसमाज द्वारा इस शुद्धि के प्रशंसक व समर्थक थे।

अपने विलक्षण इतिहास की धूम मचाओ- नये-नये बाबे तथा नेता सनातन धर्म की दिन-रात दुहाई देते नहीं थकते। धर्मरक्षा, जाति रक्षा व धर्म प्रचार के लिये जो तिल-तिल जले, संघर्षरत रहकर अद्भुत इतिहास रचकर गये उनका नाम कौन लेता है? आर्यसमाजी ही वह इतिहास नहीं जानते, तो प्रचार करके नया इतिहास कौन रचे?

राजा राममोहन राय इंग्लैण्ड गये। उनका वहाँ बड़ा सम्मान किया गया। उनका अभिनन्दन करते हुये उनको ईसाई बताया गया। आपने इस कथन का प्रतिवाद न किया। वह इंग्लैण्ड में ही चल बसे। ईसाई विधि विधान से वहीं दबा दिये गये। उनकी कब्र आज भी वहाँ है। हिन्दुत्व की रट लगाने वाले उन्हें हिन्दू सुधारक ही मानते हैं।

उसी इंग्लैण्ड में चम्बा का महाराजा अपने ब्राह्मण सेवक चन्दनसिंह को साथ लेकर इंग्लैण्ड गया। वहाँ से सैर सपाटा करने फ्रांस चला गया। चन्दनसिंह को लन्दन छोड़ गया। पीछे रुग्ण होकर चन्दनसिंह मर गया। उसे लावारिस घोषित करके ईसाई रीति से दबाया जाने लगा। तब लक्ष्मीनारायण नाम के एक दिलजले ने वहाँ आर्यसमाज की स्थापना कर दी थी। चन्दनसिंह के निधन का पता लगते ही पं. लेखराम का प्यारा योद्धा शव का

claim करके (वारिस बनकर) अपने निर्धन देश बन्धु धर्मबन्धु के शव का दाह कर्म करने की घोषणा करता है।

आर्यवीर ने शव प्राप्त कर लिया। आर्यों ने अदम्य उत्साह और जोश से शवयात्रा को जयकारों व जोश से निकाला। गोरे भी शवयात्रा में सम्मिलित हुये। क्या चम्बा में उसका निधन होने पर कोई शवयात्रा निकालता? यह तो महर्षि दयानन्द के आर्यसमाज का देश धर्मानुराग था कि उसकी शोभा यात्रा की प्रेस में धूम मच गई। हिन्दुत्व की दुहाई देने वालों ने कभी इस घटना की चर्चा की? राजा राममोहन राय को तो वे याद करते हैं।

क्या आर्यसमाज अपने ऐसे जीवन दायिनी इतिहास की रक्षा व प्रचार करके नया-नया इतिहास रचेगा?

वह ऋषि का दुलारा प्यारा माण्डले कैसे पहुँचा?- सन् १९०७ में आर्यनेता लाला लाजपतराय देश प्रेम के अपराध में गोरों के राज में सबसे पहले देश से निष्कासित करके माण्डले के दुर्ग में बन्दी बनाकर रखे गये। कोई भी भारतीय वहाँ लालाजी से मिलकर बात न कर सकता था। दुर्ग की छत पर जब वे सैर किया करते थे तब दुर्ग के पास सड़क पर खड़े भारतीय उन्हें नमस्ते किया करते थे। मेरठ के एक दिलजले आर्यसमाजी के मन में लाला जी से मिलने का जोश पैदा हुआ। वह आर्यसमाज का कभी मन्त्री रह चुका था। उसकी आर्थिक तंगी के कारण मार्ग व्यय की व्यवस्था आर्यसमाज ने की होगी। मैंने मेरठ जाकर पुराने रिकॉर्ड निकलवाकर किराये की व्यवस्था का पता लगाने का प्रयास किया। कुछ पता न चला।

वह सुयोग्य आर्यवीर महाकवि सुरूर मेरठ से माण्डले कैसे पहुँचा? उसे वहाँ लाला जी से सरकार कहाँ मिलने देती थी? वह भी दुर्ग के आसपास मण्डराता रहता। छत पर सैर करते हुये भारत के उस तप:पूत के दर्शन तो कर लिये होंगे। उसने बन्दी देशभक्त लाला लाजपतराय की मन: स्थिति व वलवलों पर वहाँ दो ऐतिहासिक कवितायें लिखीं। मैंने लालाजी के जीवन व देश सेवा पर उसकी तीन विलुप्त कवितायें खोज कर प्रकाशित करवा दीं।

आर्यवीरों! आर्यसमाज के इस बेजोड़ इतिहास की रक्षा व प्रचार आप ही को करना है। कोई भी सरकार, कोई मन्त्री सन्तरी इस प्रचार को कभी नहीं करेगा। यह कितनी दुर्भाग्यपूर्ण घटना है कि देश प्रेम के अपराध में देश निकाला पाने वाले सबसे पहले बलिदानी नेता का न तो केन्द्र सरकार नाम लेती है और न पंजाब की बातूनी सरकार। आर्यवीरों चेतो! जागो! इस बेजोड़ इतिहास की रक्षा व प्रचार करो। देश को बचाने का यही तो उपाय है।

गुरु के बाग में बन्दी स्वामी श्रद्धानन्द- अब तो कई व्यक्ति सिखों के गुरु के बाग के मोर्चा में स्वामी श्रद्धानन्द जी पर लम्बे-लम्बे लेख देने लगे हैं। स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज पर खोज करने भारत यात्रा पर आये डॉ. जे. जार्डन्स को कोई नेता, कोई सभा और गुरुकुल काँगड़ी भी स्वामी जी की इस विषय की पुस्तक न दिखा सके। ईश्वर कृपा से मैं तब तक इसकी एक दुर्लभ प्रति आर्यवीर मदनलाल गिदड़बाहा वालों के सहयोग से खोज कर चुका था। मैंने इसे प्रकाशित करके प्रचार का अभियान छेड़ दिया। डॉ. जे. जार्डन्स मुझसे यह पुस्तक लेकर गये थे।

मेरे ज्येष्ठ भ्राता प्रिंसिपल यशपाल जी दीनानगर में कार्यरत थे, तब वहाँ जाने पर एक बार आपने मुझे बताया कि दीनानगर के आर्यसमाज के पुराने नेता श्री लाला देशराज जी के पास तेरे लिये एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण जानकारी है।

उसी दिन सायंकाल समय वह स्वामी सर्वानन्द जी के दर्शन करके घर लौटने लगे तो मैं भी साथ हो लिया। लाला जी से अपना वह संस्मरण सुनाने को कहा। आपने चलते-चलते भाव भरित हृदय से बताया, जब गुरु के बाग के मोर्चा के अभियोग में स्वामी श्रद्धानन्द के अभियोग का निर्णय सुनाया जाना था, मैं भी तब कोर्ट में पहुँच

गया। कोर्ट में भारी भीड़ थी। तिल धरने को भी स्थान नहीं था। सिख भाई भी भारी संख्या में केस का निर्णय सुनने आये थे। आर्यसमाजी तथा स्वामी जी के प्रति श्रद्धा रखनेवाले हिन्दू भी अच्छी संख्या में कोर्ट पहुँचे।

जब न्यायाधीश ने स्वामी जी को दण्ड सुनाया तो निर्णय सुनते ही उनके चरणस्पर्श करके आशीर्वाद लेने की होड़ सी लग गई। पुलिस के लिये व्यवस्था बनाये रखना कठिन हो गया। पुलिस के बड़े अधिकारी ने कहा, ''स्वामी जी! आप कोर्ट के बाहर पेड़ के नीचे खड़े हो जावें। सब जी भर कर चरणस्पर्श कर लें।'' लाला देवराज ने कहा, ''कि मैं उस समय के दृश्य का शब्दों में वर्णन नहीं कर सकता।''

स्वामी जी ने उस मोर्चे में भाग लेकर देश की, सिखों की और आर्यसमाज की शान को चार चाँद लगा दिये। अब राजनेता स्वामी जी महाराज की देश के स्वराज्य संग्राम में इस योगदान को एकदम भूल चुके हैं। आर्यसमाज इस आन्दोलन में स्वामी जी के योगदान के वास्तविक स्वरूप व इतिहास की रक्षा करे। एक ने कभी यह लिखा था कि उस मोर्चे में जत्था ले जाते हुये आप बन्दी बना लिये गये। यह इतिहास नहीं, मन गढन्त गप्प है। आर्यसमाज अपने इतिहास को प्रदूषित होने से बचावे। इसी में सबका भला है।

आर्यसमाज के इतिहास-निर्माताओं ने जनहित में जो दु:ख कष्ट झेले, साहस शौर्य दिखाया वह अपनी स्वार्थ सिद्धि व लोकैषणा के लिये नहीं था। उनकी भव्य भावना का तो दूसरा उदाहरण इतिहास में मिलना अति कठिन है। उसी भावना से उस इतिहास की रक्षा होनी चाहिये।

श्री महाशय राजपाल जी की हत्या के लिये तीन हत्यारे योजनाबद्ध ढंग से बारी-बारी आये। तीनों को शूरवीर परोपकारी आर्यों ने कुकृत्य करने पर पकड़ लिया। तीनों के जीवन पर पाकिस्तान में छपी एक पुस्तक मैंने बड़े ध्यान से पढ़ी है। उनका जीवन लिखने वाले ने आर्य शूरवीरों द्वारा उनके पकड़े जाने की घटना कैसे घटी? इसे छिपाने के पूरा प्रयास किया है। इसी में आर्यसमाज का गौरव है।

मैं पहले हत्यारे खुदाबख्श पहलवान के पकड़े जाने की घटना संक्षेप से यहाँ देता हूँ। इसे पूज्य स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी ने तत्काल कलाई से कसकर पकड़ लिया। उसे मुसलमान 'इक्को जिहा'-(अद्वितीय) नाम से पुकारते थे। उस अद्वितीय का हमारे प्रतापी अखण्ड, ब्रह्मचारी की जकड़-पकड़ से छूटना असम्भव हो गया।

महाशय राजपाल जी के दो ही जीवन आज तक छपे हैं। एक तो इन्हीं पूजनीय स्वामी जी ने लिखा। आपने उस में यह लिखा ही नहीं कि हत्यारे को मैंने पकड़ा। कभी जीवन भर व्याख्यान में भी ऐसा नहीं बताया। आर्यो! इस इतिहास का भी कभी तो प्रचार किया करें। महाशय जी का बड़ा जीवन चरित्र मैंने लिखा है। मैंने इस विषय में विनष्ट होते स्रोत खोजकर पूरा इतिहास लिख दिया है।

इतिहास जैसे घटा वैसे ही लिखा जाना चाहिये। मास्टर आत्माराम जी एफ.ए. पास भी नहीं थे। उन को बी.ए. लिखकर इतिहास प्रदूषित किया या इतिहास की रक्षा की? ऐसे ही लाला लाजपतराय, महाशय कृष्ण और पं. गंगाप्रसाद जी के बारे में मनगढ़न्त सामग्री का परोसा जाना इतिहास घात है। मैं ऐसे उदाहरण देना नहीं चाहता।

आओ! आर्यसमाज के गौरवपूर्ण इतिहास के प्रचार में शक्ति लगा दें। मैं आर्यसमाज के कुछ पत्रों की लुप्त फाइलों के आधार पर इतिहास पर बहुत कुछ नया प्रकाश डालूँगा। पाठक पढ़कर दंग रह जावेंगे। जो कुछ लिखूँगा सप्रमाण लिखूँगा। जीवन की साँझ में मेरी इस सेवा की प्रतीक्षा कीजिये। प्रभु मेरी यह कामना पूरी करें। यही चाहना है।

- वेदसदन, न्यू सूरजनगरी, अबोहर, पंजाब।
मो. ९४१७६४७१३३

वेद के राजनैतिक सिद्धान्त

पं. दीनानाथ सिद्धान्तालङ्कार

राजनीति व राजधर्म - राजनीति शब्द से प्राय: चालू शासन सम्बन्धी विविध स्वरूपों और व्यवहारों को समझा जाता है। अंग्रेजी में जिसे ''पालिटिक्स'' कहा जाता है, हिन्दी में उसके लिए ''राजनीति'' शब्द प्रयुक्त होता है। पर, वैदिक दृष्टि से ''राजनीति'' शब्द का व्यवहार कहीं नहीं किया गया है। वैदिक वाङ्मय में इसके लिए ''राजधर्म'' शब्द है। इसलिए सत्यार्थप्रकाश के छठे समुल्लास का प्रारम्भ महर्षि दयानन्द ने ''अथ राजप्रजाधर्मान् व्याख्यास्याम:''- इन शब्दों के साथ किया है। चारों वर्णों और चारों आश्रमों का वर्णन करने के पश्चात् मनु महाराज कहते हैं-

राजधर्मान् प्रवक्ष्यामि यथावृत्तो भवेन्नृपः।
संभवश्च यथातस्य सिद्धिश्च परमापथा।।

राजा किस प्रकार का व्यवहार करने वाला हो उस राजधर्म को अन्त में बताऊँगा ताकि उसका अवलम्बन करने से परमसिद्धि को प्राप्त कर सके। फिर भी 'राजनीति' शब्द का एकदम बहिष्कार नहीं किया जा सकता है, क्योंकि अब इसका प्रयोग विस्तृत रूप से होता है ''नीति'' और ''धर्म'' में मूलत: कोई विशेष भेद नहीं है ।'नीति का अर्थ धूर्त्तता, चालाकी, धोखाबाजी, छलकपट इत्यादि नहीं है, जैसा कि प्राय: समझा जाता है। इसका वास्तविक अर्थ तो ''सरल और सीधे मार्ग की ओर ले जाने वाले व्यवहार'' का नाम है। वेद के मन्त्र ''अग्ने नय सुपथा राये'' में 'नय' शब्द का वही अर्थ है जो 'नीति' का है अर्थात् प्रभु हमें उन्नति के सरल और सीधे मार्ग की ओर ले चले । फलत:, राजनीति व राजधर्म वह मार्ग है जिसके अन्तर्गत धर्म के अनुसार अर्थ प्राप्ति, अर्थात् शुद्ध साधनों के व्यवहार से 'काम' की उपलब्धि अर्थात्, शुभ इच्छाओं और कामनाओं की पूर्ति हो।

राजनीति नहीं, प्रजानीति - आज के युग में कुछ शब्द ऐसे हैं जो अत्यन्त तिरस्कार युक्त बन गये हैं। इन शब्दों का जब कभी प्रयोग किया जाता है, तब श्रोता के हृदय में, पूर्व संचित संस्कारों और आग्रहों के कारण, एक घृणा और उपेक्षा की प्रतिक्रिया होती है। ऐसे ही शब्दों में एक शब्द, आज के व्यहार में, 'राजा' है। कहा जाता है कि 'राजाओं का युग लद गया, अब प्रजा का युग है।'आधी सदी से विश्व में प्रजा के विप्लवों और विद्रोहों द्वारा 'राजाओं' का निरन्तर, अन्त किया जा रहा है। स्वतन्त्रता प्राप्ति से पहले भारत में ही सैकड़ों राजा थे, पर अब उन्हें भी 'प्रजा' की कक्षा में बैठा दिया गया है। इसलिए 'राजधर्म' की अपेक्षा 'प्रजा धर्म' और 'राजनीति' की अपेक्षा 'प्रजानीति' पर अधिक बल दिया जाना चाहिए।

राजा के कर्त्तव्य - पर वैदिक राजनीति का मूलभूत सिद्धान्त सदा ही यह है कि 'राजा वही हो सकता है जो रक्षक हो'- **'राजा कस्मात् प्रजा रंजनात्'**। इस सम्बन्ध में वेद में अनेक मन्त्र आते हैं। अथर्व वेद, द्वितीय काण्ड, सूक्त ५, मन्त्र १, उदाहरण के रूप में प्रस्तुत है-

इन्द्र जुषस्व प्रवहा पाति शूर हरिभ्याम्।
पिबा सुतस्य मतेरित मधोश्चका नश्चसर्मदाय।।

भावार्थ- हे राजन्! इस उत्कृष्ट राज्य के भार को तू अपने सामर्थ्यवान् कन्धों पर उठा। हे वीर! उत्तम रथों के द्वारा युद्ध भूमि में शत्रु पर आक्रमण कर प्रजा रूपी अपने पुत्र के कल्याण के लिए तू हर्षदायक ज्ञान को ग्रहण कर।

इसी प्रसंग में अथर्ववेद काण्ड ६, सूक्त १८ मन्त्र २ भी उल्लेखनीय है-

त्वमिन्द्राधिराजः श्रवस्युरुत्वं सूरभिभूति जनानाम्।
त्वं दैवी विश इमा वि राजा युष्मत्क्षमलयरंत अस्तु।।

भावार्थ- हे राजन्! सदा रहने वाले, राजाओं के

राजा उस परमात्मा की कृपा से तू जनता का राजा बना है। तू दिव्य गुणयुक्त होता हुआ इन प्रजाओं का कल्याण करने वाला हो और उस प्रभु की कृपा से तू राजधर्म का पालन करने वाला हो। हमारा यह राष्ट्र नाश रहित हो। वेद के इस आदेश के आधार पर ही राजा के कर्त्तव्यों के सम्बन्ध में महाभारत शान्ति पर्व में भीष्म पितामह युधिष्ठिर को राजधर्म का उपदेश देते हुए कहते हैं-

सदानुरक्त प्रकृतिः प्रजा पालन तत्परः।
विनीतात्मा हि नृपतिभूयसीं श्रियमश्नुते।।

मधुर स्वभाव वाला, प्रजा पालन में तत्पर, स्वभाव में विनय-ऐसा राजा कल्याण को प्राप्त करता है।

दूसरा सिद्धान्त- प्रजा की सहमति और सम्मत्ति

वेदोक्त राजनीति का दूसरा सिद्धान्त यह है कि राजा प्रजा की सहमति और सम्मत्ति से राज्य करे।'राजा' शब्द से प्रायः यह समझा जाता है कि वह एक स्वेच्छाचारी, निरंकुश और क्रूर व्यक्ति का नाम है। पर, वेद का 'राजा' इससे सर्वथा विपरीत है। उसे आदेश दिया गया है कि वह जनता के मत से राज्य का संचालन करे और जनता का मत जानने के लिए प्रतिनिधियों की तीन सभाएँ स्थापित करे। ऋग्वेद मण्डल ३, सूक्त ३८, मन्त्र १६ में स्पष्ट कहा गया है।

त्रीणी राजाना विदथे पुरुणी परिविश्वानि भूषथः सदांसि।
अपश्यना मनसा जगन्वान् ब्रुते गन्धर्वा अपि वायु केशान्।।

भावार्थ- प्रजा के लिए विविध प्रकार के सुखों की व्याख्या करने के लिए सूर्य के सदृश प्रकाशयुक्त तीन सभाओं की स्थापना करे प्रभु कहते हैं कि ऐसी तीनों सभाओं से प्रजाओं का हित साधन होगा। इन सभाओं के सदस्य वही हो सकते हैं जो सत्याचरण के व्रत पालक, विज्ञानवान् और राजकीय व्यवहार में कुशल तथा सूर्य रश्मियों के तुल्य अपने गुणों से प्रकाशित हों। इन तीन सभाओं के नाम पर कार्यक्षेत्र का स्वरूप इस प्रकार है-

(१) आर्य राजसभा- जिसमें **राजकार्यों पर विशेष** रूप से विचार किया जाए। भारत के आधुनिक संविधान के अनुसार इसका स्वरूप 'लोकसभा' सदृश है। **(२) 'आर्य विद्यासभा'** जिसके द्वारा विविध प्रकार की विद्याओं का प्रचार हो। संयुक्तराष्ट्र संघ में इस समय 'संयुक्तराष्ट्र शैक्षणिक-सामाजिक-सांस्कृतिक संगठन' (यूनेस्को) जो कार्य करता है लगभग वही स्वरूप इस 'आर्य विद्यासभा' का है।

(३) 'आर्य धर्मसभा' जिसके द्वारा धर्म, नीति और सदाचार का प्रचार हो। जब तक देश में विधिवत् व्यक्तिगत, सामाजिक, राष्ट्रीय और विश्वहित सम्बन्धी कर्त्तव्यों और नीतियों का प्रचार नहीं होगा और प्रत्येक राष्ट्र के प्रत्येक व्यक्ति को सदाचारी बनाने का प्रयत्न न किया जाएगा, तब तक विश्व में कभी शान्ति स्थापित नहीं हो सकती।

तीसरा सिद्धान्त- राजा और तीन सभाओं के सम्बन्ध में - इन तीनों सभाओं और राजा- दोनों के पारस्परिक सम्बन्ध कैसे हों- इसका निर्देश वेद के इस मंत्र में दिया गया है-

सभ्य सभां मे पाहि ये च सभ्याः सभासदः।।

अथर्व, काण्ड १९ अनु. ७, मन्त्र ६

अर्थात् इन सभाओं के निर्णयों का राजा और सभासद् दोनों पूरी सचाई के साथ पालन करने वाला हो। राजा कहता है कि इस प्रकार आप मेरी रक्षा करने वाले होंगे। जिस राष्ट्र में राजा और सभासद् इन नियमों का पालन नहीं करते, वहाँ कितनी भयावह स्थिति पैदा हो जाती है- इसका उत्तर शतपथ ब्राह्मण में, एक प्रबल चेतावनी के रूप में, निम्न शब्दों में दिया गया है-

राष्ट्रमेव विश्याहन्ति तस्माद्राष्ट्री विशं घातुकः।
विशमेव राष्ट्रायाद्यां करोति यस्माद्राष्ट्री विशमन्ति न पुष्ट पशुं मन्यत।।

इति। काण्ड १३, प्र. २, बा. ३।

भावार्थ- अगर राजा और राजवर्ग प्रजा से स्वतन्त्र हो, निरंकुश रूप में तानाशाहों की तरह व्यवहार करें, तो

राज्य में अन्धाधुन्ध घुसकर प्रजा का नाश कर देंगे। इन सभाओं के बन्धन से हीन, मनमर्जी से शासन करने वाला उन्मत्त पशु के समान राष्ट्र का घातक होता है।

वैदिक राजनीति के इस तीसरे सिद्धान्त में और इन आर्य शब्दों में कितना गहन और अटल शब्द सन्निहित है। पिछली आधी सदी के दो प्रलयंकारी विश्वयुद्ध और उसके बाद भी अभी तक विश्व के किसी न किसी देश में चल रही लड़ाइयाँ, विद्रोह, विप्लव, क्रान्ति, उथल-पुथल इत्यादि एक स्वर से उसी त्रिकालाबाधित सत्य की पुष्टि कर रही हैं जिसका निर्देश उपयुक्त मंत्रों में किया गया है।

चौथा सिद्धान्त - मताधिकार किसको!

आज की राजनीति में लोकतन्त्र (डैमोक्रेसी) का विशेष महत्त्व समझा जाता है पर यह पद्धति सर्वथा निर्दोष हो- ऐसी बात नहीं है। 'एक व्यक्ति एक मत' (वन मैन, वन वोट) यह सिद्धान्त सुनने में तो बड़ा प्रिय लगता है। पर व्यवहार में लाने पर कई उलझनें पैदा करता है। इस शासन पद्धति में सबसे बड़ा दोष यह है कि जनता के नाम पर कुछ लोग मिल कर एक दल बना लेते हैं और येनकेन प्रकारेण बहुमत प्राप्त कर शासन सूत्र पर अधिकार कर लेते हैं। इस प्रकार दलगत राजनीति का प्रादुर्भाव हो जाता है। हर दल में सब व्यक्ति धर्मात्मा, निःस्वार्थ देशसेवक और श्रेष्ठ पुरुष हों, ऐसी बात नहीं होती। इसके विपरीत देखा यह गया है कि कुछ स्वार्थी, धूर्त, चरित्रहीन व्यक्ति एक सुसंगठित दल के रूप में 'प्रजातन्त्र' के नाम पर देश का शासन सम्भाल लेते हैं। वस्तुतः, यह एक प्रकार प्रच्छन्न रावणराज ही होता है। इसलिए, ब्रिटेन के प्रसिद्ध साहित्यिक और विचारक बर्नार्ड शा ने 'डेमोक्रेसी' (लोकतन्त्र) को 'देमन क्रोसी' (राक्षसतंत्र)का नाम दिया है। विश्व का सबसे पुराना और सर्वश्रेष्ठ लोकतन्त्र राज्य ब्रिटेन को माना जाता है पर बर्नार्ड शा ने एक बार ब्रिटेन की पार्लमेंट के सदस्यों का विश्लेषण करते हुए व्यंग्य किया था कि इनमें आधे से अधिक भ्रष्टाचारी, दुराचारी, असभ्य और छिपे चोर-डाकू हैं।

एक विद्वान् और हजार मूर्ख - वैदिक राजनीति के अनुसार शासन का आधार 'एक व्यक्ति, एक मत' नहीं होना चाहिए किन्तु योग्य, बुद्धिमान्, विद्वान् और राष्ट्र सेवकों को ही मताधिकार हो और शासन सूत्र उन्हीं की प्रेरणा से हो । वेद कहता है-

यत्र ब्रह्म च क्षत्रं च सम्यञ्चौ चरतः सह।।
तं लोकं पुण्यं प्रज्ञेषं यत्र देवा सहाग्निना।।

यजु. २०/२५

जिस देश में विद्वान्, ज्ञानी, ब्रह्मवित् और शूरवीर, बलवान् तेजस्वी- दोनों प्रकार की शक्तियों वाले व्यक्ति मिलकर काम करते हैं, वही पुण्य देश है। इसका यह मतलब नहीं है कि वैश्य और शूद्रों की उपेक्षा की गयी है। वैश्य व्यापार,वाणिज्य द्वारा और शूद्र सेवा द्वारा उपर्युक्त ब्रह्म शक्ति और क्षत्रशक्ति के नेतृत्व में काम करने वाले हों। इस सिद्धान्त को किस प्रकार कार्यान्वित किया जाये, इसका निर्देश मनुस्मृति में इस प्रकार दिया गया है-

(१) ऋग्वेदविद्यजुर्विच्च सामवेदविदेव
वा अवरा परिषज्ज्ञेया धर्म संशय निर्णये।।
(२) एकोऽपि वेदविद् धर्म यो व्यवस्येद् द्विजोत्तमः।
स विज्ञेयः परो धर्मो नाज्ञानामुदितोऽयुतैः।।
(३) अवृतानाममन्त्राणां जातिमात्रोपजीवि
नाम्। सहस्त्रशः समेतानां परिषत्त्वं न विद्यते ॥
(४) यं वदति तपोभूता मूर्खा धर्ममतद्विदः।
तत्पापं शतधाभूत्त्वा तद् वक्तु न नुगच्छति।।

अ. १२।१११-११५

जिस सभा में ऋग्, यजु, सामवेद जानने वाले तीन सभासद् होके व्यवस्था करें, उसका कोई उलन्घन न करे। एक भी वेदविद्, द्विजों में उत्तम, श्रेष्ठ व्यक्ति जो व्यवस्था दे वही धर्म है, लाखों अज्ञानियों द्वारा कही गयी बात कभी नहीं माननी चाहिए। जो ब्रह्मचर्य,

सत्यभाषणादि व्रत, वेदविद्या व विचार से रहित केवल जाति अभिमान पर निर्भर करते हैं, ऐसे हजारों व्यक्तियों से भी मिलकर परिषद् नहीं बनती है। मूर्ख और धर्म के तत्त्व को न जानने वाले, अन्धकारयुक्त व्यक्ति जिस बात को कहें, वह सैंकड़ों के प्रभाव से पाप रूप होकर उन बोलने वालों के पीछे लग जाती है। इसी प्रकरण में मनु महाराज कहते हैं कि इस सभा में कम से कम १० विद्वान् हों जो वेद, न्याय शास्त्र, निरुक्त, धर्म शास्त्र जानने वाले ब्रह्मचारी, गृहस्थी और वानप्रस्थी हों।

पाँचवाँ सिद्धान्त- विश्वशान्ति का एक मात्र उपाय-विश्व सरकार।

वैदिक धर्म की राजनीति में चक्रवर्ती और अखण्ड राज्य को ही पाया गया है। वेद में अनेक ऐसे मन्त्र हैं जिसमें यही प्रार्थना की गयी है। उदाहरण के लिए यजुर्वेद का निम्न मन्त्र प्रस्तुत किया जाता है-

इषे पिन्वस्व। ऊर्जे पिन्वस्व। ब्रह्मणेपिन्वस्व क्षत्राय पिन्वस्व। द्यावा पृथ्वीभ्याँ पिन्वस्व। धर्मासिसुधर्म। अमेन्यस्मे नृभ्णानि धारय, ब्रह्मधारय, क्षत्रंधारय, विशंधारय।। ३८/१४

आर्याभिविनय में इस मन्त्र का अर्थ करते हुए महर्षि दयानन्द सरस्वती लिखते हैं- 'हे महाराजाधिराज पर ब्रह्मन्, 'क्षत्राय' अखण्ड चक्रवर्ती राज्य के लिए शौर्य, धैर्य, नीति, विनय, पराक्रम और बलादि उत्तम गुणयुक्त कृपा से हम लोगों को यथावत् पुष्ट कर। **अन्य देशवासी राजा हमारे देश में कभी न हों।** ...अखण्ड ऐश्वर्य हमारा आपकी कृपा से सदा बना रहे।

वस्तुत:, विश्व शान्ति का एकमात्र उपाय एक विश्व सरकार (वर्ल्ड गवर्नमेन्ट) है। प्राचीन भारत में 'अश्वमेध' आदि यज्ञ इसी लक्ष्य के प्रतीक थे। वेद का राजधर्म ऐसा है जिससे संसार में साम्य भावों का विस्तार होता है और विश्व के प्रत्येक चेतन प्राणियों को लाभ पहुँचता है। जब तक विश्व में खण्डित राज्य और विविध प्रकार की शासन व्यवस्थाएं रहेंगी, तब तक शान्ति की स्थापना कभी नहीं हो सकती। प्रथम विश्व युद्ध के बाद 'लीग ऑफ नेशन्स' और द्वितीय विश्व युद्ध के बाद 'संयुक्तराष्ट्र संघ' की स्थापना इसी दिशा में प्रयत्न हैं। यद्यपि वह एकदम अधूरे, अधकचरे पक्षपात पूर्ण और ईर्ष्या-द्वेषयुक्त हैं। आज विश्व में प्रमुख राजनीतिज्ञ और तत्त्ववेत्ता 'एक विश्व सरकार' को ही इस युग के लगातार बढ़ा रहे। पारस्परिक संघर्षों का अमोघ साधन बता रहे हैं। इस सन्दर्भ में ब्रिटेन के प्रमुख राजनीति विशारद और इतिहास वेत्ता श्री एच. जी. वेल्स के निम्न शब्द उनकी पुस्तक •Sulvaging of Civilisationukion (सभ्यता का उद्धार) के विशेष उल्लेखनीय हैं-

"If man is to be saved from destruction there must be such a World Government, that should have might to super- cede the British Artillery, to surpass the French Artillery and, Airforce superceding all navy and air forces. For many flags there must be one sovereign flag"

अर्थात्, यदि मनुष्य को विनाश से बचना है तो विश्व सरकार होनी चाहिए यह सरकार ऐसी हो जिसकी शक्ति ब्रिटेन और फ्रांस की सेनाओं से अधिक हो। उसकी वायु और जल शक्ति सब देशों से अधिक हो और कई राष्ट्रीय झण्डों की जगह एक ही विश्व पताका हो।

आज के विश्व में जहाँ प्रत्येक देश परमाणु शक्ति बढ़ाकर दूसरे देश की जनता को सदा के लिए भूमि पर सुला देने के लिए गुप्त प्रयत्न कर रहा हो, जहाँ एक एक इंच भू-खण्ड और एक-एक जल कण के लिए सैनिक मोर्चे बन रहे हों - एक विश्व सरकार की कल्पना शेखचिल्ली की तरह प्रतीत हो और पाश्चात्यों की दृष्टि में 'यूटोपिया' (स्वप्न लोक) हो, पर हमें यह ऐतिहासिक सत्य कभी नहीं भूलना चाहिए कि संसार में मानव उद्धार का प्रत्येक आन्दोलन, आलोचकों के दृष्टि में, यूटोपिया (स्वप्न लोक) ही होता है। वस्तुत: विश्व शान्ति का उपाय एकमात्र वही है जो वेदों ने बताया है।

आदर्श शिक्षक

डॉ. जगदेव विद्यालङ्कार

अध्यापक, प्राध्यापक, उपाध्याय, आचार्य एवं गुरु आदि शब्द शिक्षक के पर्यायवाची माने जाते हैं। विद्यार्थी को सुशिक्षित करना ही इनका मुख्य दायित्व होता है। शिक्षा या विद्या से ही मानव का निर्माण और सर्वाङ्गीण विकास होता है। मुख्य रूप से शिक्षक ही इस कार्य का निर्वहण कर सकता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थप्रकाश में शतपथ ब्राह्मण का वचन उद्‌धृत करते हुए लिखा है-

'मातृमान् पितृमान् आचार्यवान् पुरुषो वेद।'

जिसका अभिप्राय है कि माता, पिता और आचार्य ये तीनों ही बालक के गुरु अर्थात् शिक्षक होते हैं। माता से बालक सर्वाधिक सीखता है फिर पिता से और तत्पश्चात् आचार्य से। इस प्रकार ये तीनों ही बालक के शिक्षक की भूमिका में होते हैं। तात्पर्य यह है कि अच्छी सन्तान का निर्माण करने के लिए माता-पिता को भी सुशिक्षित और सुसंस्कृत होना चाहिए, परन्तु दुर्भाग्य से भारतवर्ष में अभी तक भी देहात में निम्न वर्ग में, मजदूर वर्ग में अधिकतर माता-पिता सन्तान के निर्माण में अपेक्षित भूमिका नहीं निभा पा रहे हैं, अतः बालक शिक्षक पर ही अधिक निर्भर रहते हैं।

प्राचीन काल में शिक्षा की व्यवस्था गुरुकुल शिक्षाप्रणाली के रूप में थी। महर्षि दयानन्द उसी शिक्षा व्यवस्था को श्रेष्ठ मानते हुए लिखते हैं- ''राजनियम और जातिनियम होना चाहिए कि पाँचवें अथवा आठवें वर्ष से आगे अपने लड़के और लड़कियाँ को घर में न रख सकें। पाठशाला में अवश्य भेज देवें। जो न भेजे वह दण्डनीय है।'' अथर्ववेद में भी गुरुकुल शिक्षा-व्यवस्था की विशेषता बताते हुए लिखा-

''आचार्य उपनयमानो ब्रह्मचारिणं कृणुते गर्भमन्तः। तं रात्रीस्तिस्त्रः उदरे बिभर्ति तं जातं द्रुष्टम् अभिसंयन्ति देवाः।।

अर्थात् आचार्य ब्रह्मचारी का यज्ञोपवीत संस्कार करके उसे अपने गर्भ में स्थापित करता है और उसे तीन रात तक धारण करता है उसके बाद जब वह सुशिक्षित होकर गुरुकुल रूपी गर्भ से बाहर निकलता है और रात्रि रूपी आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक अन्धकार से बचता हुआ ज्ञानरूपी सूर्य से आलोकित होता है तो विद्वान् लोग भी उस ब्रह्मचारी को देखने के लिए चारों ओर से आते हैं।''

वर्तमान काल में शिक्षा की व्यवस्था लगभग बदल चुकी है। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली अब नाममात्र रह गई हैं, अधिकतर शिक्षा स्कूल और कॉलेजों में दी जा रही है। शिक्षा भी केवल अर्थकारी बनकर रह गई है, अपितु अर्थोपार्जन का उद्देश्य भी आधुनिक शिक्षा प्रणाली से पूरा नहीं हो पा रहा है। मैकाले की शिक्षा प्रणाली को जब तक बदला नहीं जायेगा, तब तक मानव निर्माण का लक्ष्य पूरा नहीं हो पायेगा। ऐसी स्थिति में एक आदर्श अध्यापक का उत्तरदायित्व और भी अधिक बढ़ जाता है। उसे विद्यार्थियों के सम्मुख मुंह बाये खड़ी बेरोजगारी की समस्या के समाधान को दृष्टि में रखते हुए मानव मूल्यों की रक्षा का मार्ग भी प्रशस्त करना होगा। वर्तमान अवस्था शिक्षकों की परीक्षा की घड़ी है। शास्त्रकार कहता है-

''सामृतैः पाणिभिर्घ्नन्ति गुरवो न विषोषितैः।
लालनाश्रयिणो दोषास्ताडनाश्रयिणो गुणाः।''

अर्थात् जो माता-पिता और आचार्य, सन्तान और शिष्यों का ताड़न करते हैं वे जानो अपने सन्तान और शिष्यों को अपने हाथ से अमृत पिला रहे हैं और जो सन्तानों वा शिष्यों का लाड़न करते हैं वे अपने सन्तानों और विषयों को विष पिला के नष्ट भ्रष्ट कर देते हैं, परन्तु

महर्षि दयानन्द इस सिद्धान्त को प्रस्तुत करते हुए यह भी स्पष्ट कर देते हैं कि माता-पिता और अध्यापक लोग ईर्ष्या, द्वेष से ताड़न न करें, अपितु ऊपर भयप्रदान और भीतर से कृपा दृष्टि रखें। नीतिकार इसी बात को इस प्रकार से भी कहते हैं कि शिक्षक को नारियल की भांति ऊपर से कठोर और अन्दर से नम्र अर्थात् स्नेहपूर्ण होना चाहिए। सन्त कबीर भी गुरु और शिष्य के सम्बन्ध का वर्णन करते हुए एक दोहा प्रस्तुत करते हैं- ''गुरु कुम्हार सिख कुम्भ है, गढ़-गढ़ काढै खोट। अन्तर हाथ सहार दै, बाहर बाहै चोट।'' अर्थात् गुरु कुम्हार के सदृश है और शिष्य घड़े के समान है। जैसे कुम्हार घड़े का निर्माण करते हुए अन्दर हाथ का सहारा देकर ऊपर से हल्की-हल्की चोट मारकर उसकी त्रुटियों को दूर कर देता है उसी प्रकार से एक आदर्श शिक्षक को विद्यार्थी का निर्माण करना चाहिए।

ताड़ना का यह सिद्धान्त बालक के निर्माण के लिए उपयोगी तो है, परन्तु इसके लिए शिक्षक को मनोविज्ञान का, अपितु बाल मनोविज्ञान का कुशल ज्ञाता होना चाहिए अन्यथा किशोरावस्था के कुछ संवेदनशील बालक जरा सी प्रताड़ना को सहन न कर पाने के कारण आत्महत्या तक कर बैठते हैं।

एक आदर्श अध्यापक में सदाचार का गुण विशेष होना चाहिए। शिक्षक की चारित्रिक शिथिलता का दुष्प्रभाव छात्रों पर पड़े बिना नहीं रह सकता, उसकी नैतिकता की छवि पर किसी प्रकार का दाग नहीं लगना चाहिए। विषय की मर्मज्ञता यद्यपि शिक्षक का एक अलग गुण होता है। निस्सन्देह उसे अपने विषय को पढ़ाने की पूर्ण योग्यता होनी चाहिए, अन्यथा वह अपना कर्त्तव्यपालन ही नहीं कर सकता, परन्तु आचार का गुण सर्वोपरि है तभी तो शास्त्र ने कह दिया-

''आचारहीनं न पुनन्ति वेदाः।''

अर्थात् आचरण से पतित व्यक्ति को तो वेद भी पवित्र नहीं कर सकते और फिर महान् चरित्र का धनी ही तो शिष्यों में पावन चरित्र का आधान कर सकता है।

निष्पक्षता भी अध्यापक का एक विशेष और महत्त्वपूर्ण गुण होता है। शिक्षक को सभी शिष्यों के प्रति समदृष्टि रखनी चाहिए। किसी भी कारण से किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं होना चाहिए। किसी भी क्षुद्र स्वार्थ से ऊपर रहते हुए धनी-निर्धन, निर्बल-बलवान, सुन्दर-असुन्दर सभी शिष्य शिक्षक के लिए एक समान हैं। शिक्षक का आशीर्वाद, उसकी कृपादृष्टि, उसका साधुवाद, उसके द्वारा प्रदत्त प्रोत्साहन सभी के लिए यथायोग्य होना चाहिए। अध्यापक के लिए निर्व्यसनी होना आवश्यक है। समाज के सामान्य लोगों से उसका जीवन अलग होना चाहिए। लोकैषणा, वित्तैषणा और कामैषणा से प्रभावित न होकर अध्यापक को एक उच्च प्रकार का आदर्श स्थापित करना होता है अध्यापक का कोई भी दुर्व्यसन शिष्य को पथभ्रष्ट कर सकता है, क्योंकि शिष्य के लिए गुरु का जीवन अनुकरणीय होता है। गुरु शिष्य के लिए श्रद्धास्पद होता है अतः गुरु की कोई भी बुरी आदत शिष्य के लिए सहज स्वीकार्य बन सकती है। यद्यपि मानव सर्वगुणसम्पन्न नहीं हो सकता। गलती तो किसी से भी हो सकती है। अध्यापक में भी कोई मानव सुलभ त्रुटि मिल सकती है। इसी के निराकरण के लिए शिष्य को सावधान करते हुए दीक्षान्त के अवसर पर उपनिषद् की भाषा में गुरु कहा करता था-

यान्यस्माकं सुचरितानि तानि त्वयोपास्यानि नो इतराणि।

अर्थात् जो-जो हमारे जीवन में तुम्हें हमारी सच्चरित्रता दिखाई दे उसी का तुम्हें अनुकरण करना है, अन्य दोषयुक्त बातों का नहीं।

एक आदर्श शिक्षक में आत्मविश्वास और स्वाभिमान का गुण भी होना चाहिए, ताकि उसके शिष्य भी गुरु का अनुकरण करते हुए इन गुणों को धारण कर सकें। वाणी की मधुरता, वाक्पटुता, व्यवहारकुशलता, समय का सदुपयोग, नियमों का पालन, प्रसन्नवदनता आदि योग्यता यदि शिक्षक में है तो वह आत्मविश्वास और स्वाभिमान

आदि गुणों से परिपूर्ण हो सकता है।

धीरता, गम्भीरता और कर्मठता आदि गुण भी शिक्षक में अद्‌भुत समता प्रदान कर सकते हैं। ईमानदारी और परिश्रम मानवमात्र के लिए सफलता की कुञ्जी बतलाई गई है। कर्म का सन्देश देते हुए यजुर्वेद में कहा है–

''कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः।
एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे।''

अर्थात् इस संसार में कर्म करते हुए सौ वर्ष तक जीने की इच्छा करें। हे मानव! यदि तू कर्म करने मात्र पर ध्यान देगा, फल की इच्छा को मन में नहीं लाने देगा तो ऐसे निष्काम भावना वाले कर्म तुझमें लिप्त नहीं होंगे, तू कर्मबन्धन मैं नहीं फँसेगा। इस मार्ग से हटकर और कोई मार्ग नहीं है। गीता में भी श्री कृष्ण जी महाराज ने अर्जुन के माध्यम से मानव मात्र को निष्काम कर्म का सन्देश देते हुए कहा–

''कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूः मा ते संगोस्त्वकर्मणि।''

अर्थात् कर्म में ही तेरा अधिकार है फल में नहीं। तू कर्मफल का हेतु मत बन, अकर्म में तेरी प्रीति नहीं होना चाहिए। जिस अध्यापक की अकर्म में प्रीति हो जाती है वह कामचोर बन जाता है और उसके इस महान् दुर्गुण से विद्यार्थियों की महती क्षति होती है। इसीलिए वेद ने चेतावनी दी– **''अकर्मा दस्युः''** अर्थात् कर्म न करने वाला तो डाकू कहलाता है। अतः एक कर्मशील शिक्षक ही छात्रों के लिए वरदान सिद्ध होता है। छात्र ही देश और समाज के भविष्य होते हैं और शिक्षक छात्रों के माध्यम से राष्ट्रनिर्माता होता है। इस प्रकार से अद्‌भुत और अनेक गुणों का भण्डार ही एक आदर्श शिक्षक कहला सकता है। एक आदर्श शिक्षक की प्राचीन काल की भांति भारतवर्ष को फिर से जगद्‌गुरु की पदवी तक पहुँचाने की क्षमता रखता है।

रोहतक, हरियाणा।

ऋषि उद्यान में आने वाले अतिथियों से निवेदन

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि उद्यान अजमेर में आने वाले सज्जनों के निवास-भोजन की व्यवस्था की जाती है। यह व्यवस्था ठीक से चल सके, इसके लिए आप अतिथियों के सहयोग की अपेक्षा है। जो भी अतिथि यहाँ कम या अधिक दिन रुकना चाहें तो आने के कम से कम दो दिन पूर्व परोपकारिणी सभा या ऋषि उद्यान के कार्यालय में सूचना देकर स्वीकृति अवश्य प्राप्त कर लेवें। सूचना में अपना नाम, पता, दूरभाष व साथ में आने वाले व्यक्तियों की संख्या, उनकी अवस्था (आयु), स्त्री या पुरुष सहित बता देवें। शौचालय की सुविधा भारतीय या पाश्चात्त्य अपेक्षित है? आपके यहाँ पहुँचने व प्रस्थान का दिन और समय तथा भोजन ग्रहण करेंगे या नहीं, यह भी स्पष्टता से बता देवें। आधार कार्ड की छाया प्रति साथ लाएं। यह सब लिखकर व्हाट्सएप पर भेज देंगे तो श्रेष्ठ है।

आपकी सूचनाओं के होने पर आपके लिए व्यवस्था समुचित की जा सकेगी। अचानक बिना सूचना के आने पर होने वाली असुविधा व कष्ट से आप बच सकेंगे। साथ ही इससे यहाँ के कार्यकर्त्ताओं को भी अनावश्यक असुविधा से बचाने में सहायता होगी। आशा है आपका समुचित सहयोग मिल सकेगा। **सूचना हेतु सम्पर्क–**

ऋषि उद्यान कार्यालय	- ०१४५-२९४८६९८	**परोपकारिणी सभा कार्यालय**	- ०१४५-२४६०१६४
व्हाट्सएप	- ८८९०३१६९६१	**सम्पर्क का समय**	- ११ से ४ बजे तक

(किसी एक सम्पर्क पर सूचना देना पर्याप्त रहेगा) **निवेदक - मन्त्री**

वैचारिक क्रान्ति के लिये सत्यार्थ प्रकाश पढ़े।

प्रवचनमाला-१२५

अग्नि सूक्त-४६

प्रवचनकर्त्ता- डॉ. धर्मवीर

लेखिका - सुयशा आर्य

प्रिय पाठक! परोपकारी पिछले कई वर्षों से आपकी सेवा में डॉ. धर्मवीर जी के वेद प्रवचनों को प्रकाशित कर रही है। इसी शृंखला में ऋग्वेद के प्रथम सूक्त 'अग्निसूक्त' की व्याख्यान माला प्रकाशित की जा रही है। प्रवचनों को लेखबद्ध करने का कार्य डॉ. धर्मवीर की ज्येष्ठ पुत्री श्रीमती सुयशा कर रही हैं।

-सम्पादक

राजन्तमध्वराणां गोपामृतस्य दीदिविम्। वर्धमानं स्वे दमे।।

हम इस वेदज्ञान की चर्चा में ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के प्रथम सूक्त का विचार कर रहे हैं। इन समस्त मन्त्रों का ऋषि मधुच्छन्दा है, इनका देवता अग्नि है और छन्द गायत्री है। जिस मन्त्र की चर्चा हम कर रहे हैं, वो इस सूक्त का आठवाँ मन्त्र है। पिछली चर्चा में हमने, इस मन्त्र में जो बात कही गयी हे उस पर विचार किया था। इस मन्त्र में तीन बातों पर विशेष विचार किया गया है- वो परमेश्वर अध्वराणां गोपा है, वह स्वे दमे वर्धमानम् है, वह ऋतस्य दीदिविम् है। यह जो परमेश्वर है अपने स्थान पर प्रकाशमान है, कभी भी अनुपस्थित नहीं हो रहा है, यह बात हमने देखी और दूसरा हमने देखा कि हम जहाँ चाहते हैं, वहाँ पर रहता हुआ, जो हमारा अच्छा है, उसकी रक्षा करनेवाला है और एक तीसरी बात इसमें कहता है ऋतस्य दीदिविम्- अर्थात् उसकी जो उपस्थिति है, हमें पता कैसे लगती है? हमारे यहाँ 'ऋत' एक शब्द है और एक शब्द इसी अर्थ में आता है, 'सत्य'। और यह दोनों शब्द एक साथ आते हैं तो हमारे लिए विचारणीय बन जाता है कि जब दोनों एक साथ काम में आते हैं तो इनका अर्थ क्या होगा? तब जैसे हम सन्ध्या के मन्त्रों को देखते हैं- ऋतं च सत्यं चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत। वहाँ अघमर्षण मन्त्रों में ऋत और सत्य दोनों एक साथ पढ़े गए हैं। उससे सत्य भी उत्पन्न हुआ, उससे ऋत भी उत्पन्न हुआ। इसलिए ऋत का अर्थ केवल सत्य करने से तो कार्य नहीं चलता। जब दो शब्दों का उपयोग है और एक ही स्थान पर एक साथ किया गया है, तो वहाँ उनका विशेष अभिप्राय होना चाहिए। मन्त्र कहता है ऋतस्य दीदिविम्- ऋत वो है, जो परमेश्वर के शाश्वत नियम है और सत्य वो चीज है जो हमारे व्यवहार के द्वारा हम जिसे जानते हैं। जो हमारे सामने वास्तव में दिखाई देता है, दे सकता है। तो जो हमारी सीमा में आ जाता है, जिसको जानने के लिए जो उचित है, हम उसे सत्य के रूप में देखते हैं और जो परमेश्वर के कार्य के लिए जो नियम हैं, निरन्तर होने वाले हैं, सदा होने वाले है, जो अटूट है, उनको हम ऋत कहते हैं। संस्कृत भाषा में एक जगह व्रत भी कहा गया है। इसलिए परमेश्वर को जब हम पहचानते हैं, तो उसकी विशेषताओं से पहचानते हैं, उसकी एक विशेषता है कि वो व्रती है। इस व्रत शब्द का जनना है, तो हम एक बात अनुभव कर सकते हैं कि जब हम यज्ञोपवीत लेते हैं, तब हम व्रती बनते हैं। वहाँ व्रत क्या है- यज्ञोपवीत हमें व्रत का स्मरण करा रहा है। तो जो माता-पिता, आचार्य, गुरुजन हैं, परमेश्वर है, इनके प्रति जो किए जाने वाले कार्य हैं, उनको हमने व्रत में सम्मिलित किया है। इसलिए हम यज्ञोपवीत को व्रत का सूत्र कहते हैं। इसको व्रत बन्ध कहते हैं। अब यह व्रत हमारे चिह्न बन जाते हैं। इन चिह्नों से पता चलताहै कि कौन क्या है? अर्थात् एक छात्र को देखकर कि यह कमण्डल वाला है, पुस्तक वाला है, यह यज्ञोपवीत वाला है, दण्ड वाला है, यह शिखा वाला है, ऐसे चिह्नों से- 'उसने ऐसा करने का व्रत लिया है', ऐसा व्रत उसने धारण करने की सोची हुई है तो इन व्रतों से हम उसको पहचानते हैं।

ऐसे ही किसी गृहस्थ को भी उसके कार्यों से, वस्त्रों

से उसे पहचान सकते हैं। किसी वानप्रस्थी को उसके कार्यों से वस्त्रों से पहचान सकते हैं, इसी तरह संन्यासी को भी पहचान सकते हैं। अर्थात् जब कोई वस्तु जिसके अन्दर कोई नियम होता है, कोई व्रत होता है, तो वह व्रत उसकी पहचान बन जाती है, क्योंकि वही सबसे मुखर होकर स्पष्ट होकर दिखाई देती है।

तो यहाँ पर कहा ऋतस्य दीदिविम्, तो परमेश्वर जो है वो अपने नियमों से पहचाना जाता है। अर्थात् उसके नियम सत्य कैसे होते हैं– औरों के नियम तो कभी खण्डित भी हो जाते हैं पता है कि गाड़ी नौ बजे आती है, प्रतिदिनि आती है, लेकिन किसी दुर्घटनावश, टूट जाने से, किसी और कारण से स्थगित भी हो जाती है। तो मनुष्य के जो बनाए हुए नियम हैं वो शाश्वत नहीं रहते, सनातन नहीं रहते, अखण्डित नहीं रहते। वो कहीं न कहीं, किसी न किसी परिस्थिति में समाप्त हो जाते हैं। लेकिन जो परमेश्वर के नियम हैं वो कभी खण्डित नहीं होते।

इसके लिए जब हम यज्ञोपवीत धारण करते हैं, तो हम व्रतों की पालना करने का संकल्प दिलाते हैं। तो वहाँ हम पाँच उदाहरण देते हैं। उसमें एक उदाहरण देते हैं कि परमेश्वर सूर्य के समान व्रतपति है, चन्द्र के समान व्रतपति है, हम उदाहरण देते हैं कि वह वायु के समान व्रतपति हैं, हम उदाहरण देते हैं कि वह अग्नि के समान व्रतपति है।

अर्थात् संसार में इन चीजों को जब हम देखते हैं तो इनके जो गुण–कर्म–स्वभाव हैं, उन्हें बदलता हुआ नहीं पाते। अग्नि के गुणों को कभी बदलता हुआ नहीं देखते। अग्नि सदा ऊर्ध्वगामी है, सदा प्रकाशमान है, सदा जाज्वल्यमान तेजस्वी है अग्नि में ऊष्णता का गुण है। हम इसको कभी बदलते हुए नहीं देखते। जैसे जल में शीतलता का गुण विद्यमान है। हम उसे थोड़ी देर के लिए बदल भी दें, लेकिन वापस वहीं का वहीं आ जाता है। तो जो प्रकृति के पदार्थ परमेश्वर के द्वारा बनाए गए हैं, प्रकृति में विद्यमान हैं, हम देखते हैं कि उनके अन्दर कोई नियम का खण्डन नहीं होता। इसलिए उन गुणों से, उन कर्मों से उस वस्तु को हम पहचानते हैं। आग को ऊष्णता से, प्रकाश से पहचानते हैं, तेजस्विता से, ऊर्ध्वगति करने वाला होने से पहचानते हैं। वायु को गतिशीलता से, सूर्य को अत्यन्त चमकीला होने से, ऊष्णता और प्रकाशमान होने के कारण पहचानते हैं। चाँद को रात्रि और शीतलता के कारण, प्रकाश के कारण पहचानते हैं। तो यह अग्नि है, वायु है, सूर्य है, चन्द्र है, इन्हें पहचान रहे हैं तो यह पहचान इनके व्रत हैं। इनके व्रतों से हम इन्हें पहचान रहे हैं तो पहचानने का तरीका ही नहीं है। इसके लिए एक मन्त्र है विष्णोः कर्माणि पश्यत, यतो व्रतानि पस्पशे इन्द्रस्य युज्यः सखा। आप जिस परमेश्वर की बात कर रहे हैं, वह परमेश्वर विष्णु है। आप विष्णु को जानना चाहते हैं, मिलना चाहते हैं तो पहले हमें यह समझ लेना होगा कि परमेश्वर का नाम विष्णु क्यूँ है। विष्णु शब्द का अर्थ है– वेवेष्टि, व्याप्नोति चराचरं जगत् इति विष्णुः। अर्थात् सब जगत् में जो व्याप्त होकर रह रहा है, सब जगत् में जो विद्यमान है उसे विष्णु कहते हैं। तो वह परमेश्वर सब स्थानों पर विद्यमान है, यह पहली शर्त है मन्त्र कहता है– विष्णोः कर्माणि पश्यत, उसकी पहचान कैसे करोगे, कहा कि कर्माणि पश्यत– उसके कामों को देखो। वो जो कर रहा है, जो हो रहा है संसार में, उसको देखो, तो उसके नियमों का पता लगता है, उसकी इच्छाओं का पता लगता है, उसके कार्यों का पता लगता है– किनसे, उसके व्रतों से। व्रत क्या? नियम।। वह जो निर्धारित निश्चित चुना गया, वह जो नियम है उसे व्रत कहते हैं इसका हम मनुष्य के लिए प्रयोग करें तो कहेंगे–

अनृतात् सत्यमुपैमि। हम जैसे मन्त्र पढ़ते हैं–अग्ने व्रतपते व्रंत चरिष्यामि तच्छकेयं तन्मे राध्यताम्। इदमहमनृतात् सत्यमुपैमि। मतलब व्रत क्या काम करते हैं? व्रत हमें अच्छाई के मार्ग पर ले जाते हैं। अनृत से सत्य की ओर ले जाते हैं। तो जो उसका ऋतपना है, उसके नियम हैं, उसकी सत्यता है वह है ऋतस्य दीदिविम्– वो चमकता है, प्रकाशित हो रहा है अपने नियमों से, अपने कर्मों से, अपने व्रतों से। दूसरे मन्त्र में कहा था– यतो व्रतानि पस्पशे। यहाँ एक समझने की बात है। मन्त्र में जो एक शब्द आया, पस्पशे। पस्पश शब्द वैसे, प्रारम्भ को, लक्षणों को बतानेवाले को कहते हैं। लेकिन पस्पश बताने वाले को कहते हैं, इसलिए जो राजाओं के चर होते हैं, दूत होते हैं उनको भी पस्पश कहते हैं। गुप्तचर जो होते हैं,

उनको पस्पश कहते हैं। इसके लिए संस्कृत साहित्य में एक बड़ी अच्छी उक्ति है– शब्द विद्येव नो भाति राजनीतिरपस्पशा। जैसे शब्द विद्या में पस्पश का महत्त्व है, वैसे ही राजनीति में भी पस्पश का महत्त्व है। अर्थात् यदि शब्द विद्या में आप पस्पश से परिचित नहीं है, आपको उसका ज्ञान नहीं है, तो शास्त्र में आपकी गति नहीं हो सकती। आप उसे समझ नहीं सकते। वैसे ही यदि राजा को भी किसी बात की जानकारी नहीं हो सकती। तो यह 'पस्पश' शब्द राजनीति में गुप्तचर के लिए आता है और दूसरा व्याकरण में, जो अष्टाध्यायी पर सबसे बड़ा प्रौढ़ ग्रन्थ है, जिसे हम महाभाष्य कहते हैं तो पतञ्जलि द्वारा लिखा गया है, उसके अन्दर जो विभाग है, वो है 'आह्निक'। वैसे अह्न दिन को कहते हैं। आप या तो यह समझ सकते हैं कि एक दिन में उतना लिखा गया है, या एक दिन में उतना पढ़ा जाना चाहिए।

वह आजकल सम्भव तो नहीं है, लेकिन उसका नाम आह्निक है। इन विभागों में जो पतञ्जलि कृत पहला विभाग है, वह पस्पश आह्निक कहलाता है। अर्थात् उसका महत्त्व ऐसा है जैसे दीपक से आप सब प्रकाशित कर लेते हैं और आपको हर वस्तु स्पष्ट दिखाई देने लगती है और मन में कोई सन्देह नहीं रहता है। वैसे ही शास्त्र में आप यदि इस भाग को देख लेते हैं, तो शास्त्र में भी आपकी गति सामान्य सहज हो जाती है। यहाँ पर क्योंकि उसके प्रयोजन क्या है, उसका प्रकार क्या है, परिभाषा क्या है, यह सब बताया गया है तो यहाँ मन्त्र में इसका प्रयोग किया गया यतो व्रतानि पस्पशे। अर्थात् कुछ चीजें छिपी हुई रहती है और वे छिपे हुए नियम यदि हमें पता चल जाये तो हम उन्हें आविष्कार कहते हैं। अर्थात् जो नियम प्रकृति में है, लेकिन हमें पता नहीं है, इसलिए हम उसका उपयोग नहीं कर सकते, काम में नहीं ला सकते। लेकिन हमें यदि उस नियम का पता चल जाए– जेसे भारतीय परम्परा में गुरुत्वाकर्षण के नियम को बहुत पहले से जानते थे, लेकिन पश्चात्य समुदाय जो गुरुत्वाकर्षण सम्बन्धी नियम बताता है, वो न्यूटन प्रतिपादित हैं। न्यूटन पेड़ के नीचे बैठे हैं ऊपर से गिरते हुए सेव को देखकर उनके मन में आता है कि यह सेव ऊपर की तरफ क्यूँ नहीं गया? इसका विशेष कोई कारण होना चाहिए और वह कारण वह नियम है, जिसे आप गुरुत्वाकर्षण कहते हो, जो पृथ्वी के अन्दर विद्यमान है। जिसके कारण बाहर की सारी वस्तुएँ पृथ्वी की ओर आकर्षि होती हैं। तो यह नियम हमें पता नहीं था, पता चल गया। वैसे ही प्रकृति में नियम तो परमेश्वर का है, लेकिन हमें पता नहीं है। तो यदि ईश्वर को जानना पहचानना चाहते हैं, उसे समझने में कुछ विशेष योग्यता पाना, तो कहा कि आप एक काम करो– 'विष्णोः कर्माणि पश्यत।' तुम परमेश्वर क्रिया परमेश्वर के कार्य हैं, सृष्टि में होने वाली बातें हैं, उनको यदि ध्यान से देखोगे, समझोगे तो ऐसा होने पर 'यतो व्रतानि पस्पशे' तुम्हें उसके व्रत जो छिपे हुए हैं, वे दिखाई देंगे और वे जो व्रत है तुम्हारे लिए लाभदायक हैं, हानिकारक नहीं है। क्यूँ हानिकारक नहीं है तो कहता है 'इन्द्रस्य युज्यः सखा।' जिसकी बात की जा रह है वो विष्णु है और विष्णु से इन्द्र भिन्न हैं और विष्णु, इन्द्र का सखा है। तो यहाँ व्यापक होने से विष्णु, परमेश्वर का नाम है, तो इन्द्र यहाँ पर जीवात्मा का नाम है। तो विष्णु इन्द्र का सखा है, अर्थात् परमात्मा, जीवात्मा का सखा है। और उसका सखा मित्र होने से कभी भी उसका अहित नहीं करता है, बुरा नहीं चाहता है और वो कैसा मित्र है– दुनिया में कुछ मित्र तो मिलते हैं और मिलकर बिछुड़ जाते हैं और फिर उनका पता नहीं चलता है। लेकिन यहाँ ऐसा नहीं है, यहाँ विष्णु जो है इन्द्रस्य युज्यः सखा है। यदि वह व्याप्त है, सब जगह विद्यमान है, इन्द्र का जीवात्मा का, सदा जुड़ा रहने वाला साथी है। इन्द्र परमेश्वर से कभी भी पृथक् नहीं होता है।

तो इस मन्त्र में जो बात हमें समझायी गयी है कि उस परमेश्वर को यदि हम जान सकते हैं, समझ सकते हैं तो उसके नियमों से समझ सकते हैं, उसकी पहचान से समझ सकते हैं, उसकी पहचान से सकते हैं और वह पहचान हमारी अच्छी चीजों की रक्षा करने के काम आती है, हमारी सुरक्षा करने के काम आती है। हमारा मार्गदर्शन करने के काम अती है। यह मन्त्र का विशेष भाव है।

संस्था समाचार

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा स्थापित परोपकारी सभा के माध्यम से ऋषि उद्यान में वर्षो से सुबह शाम यज्ञ, प्रवचन, संध्या आदि नियमित रूप से होता रहता है। अभी प्रात: काल का यज्ञ, वेदपाठ व वेद स्वाध्याय ब्र. आकाश जी व सायंकाल का यज्ञ, संध्या ब्र. धवल जी द्वारा किया जा रहा है। परोपकारी सभा व राजस्थान आर्य वीर दल की ओर से ऋषि उद्यान में १४ से २१ मई २०२३ को बच्चों के लिए आर्य वीर दल शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें गुरुकुल ऋषि उद्यान के ब्रह्मचारियों ने शिक्षकों के सहयोगी रूप में अपना सहयोग प्रदान किया। साथ ही सभी आर्यवीरों को ११ कुण्डीय यज्ञ कराकर उन आर्यवीरों को यज्ञ का प्रशिक्षण भी दिया गया एवं उनका यज्ञोपवीत भी कराया गया है। इन सभी कार्यों में गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने बहुत ही सहयोग प्रदान किया।

प्रवचन के क्रम में आचार्य कर्मवीर जी ने ऋ.१०/१२८/४ **मह्यं यजन्तु मम यानि हव्याकूतिः** इस मंत्र में कहा गया है कि हमारा कल्याण अपने सद्‌गुणों से ही हो सकता है। जो हमारे अंदर सद्‌गुण है, उनके द्वारा ही हम अपना कल्याण कर सकते हैं। अवगुण हमें पतन की ओर ले जाने वाले होते हैं। कई बार हमें पता नहीं चलता कि हम अपने अवगुणों को भी गुण के रूप में प्रस्तुत करते हैं। बुराई को दूर करने का सर्वप्रथम उपाय यह है कि पहले बुराई को स्वेच्छा से स्वीकार करें ।दूसरी बात मेरे मन का चिंतन भी सत्य होवे। मन में विकार आते ही आत्मा भी विकार ग्रस्त हो जाता है। जैसे कि यदि दर्पण मैला है तो हम भी स्वयं को गंदा अनुभव करते हैं। जितनी बड़ी बुराई होगी उतना ही अधिक प्रयत्न करना होगा। कई बार मन में प्रश्न आता है कि संध्या योगाभ्यास आदि कब तक करें इसका उत्तर यह है कि जब तक हमारा लक्ष्य प्राप्त ना हो जाए समाधि प्राप्ति ना हो जाए तब तक हमें करते रहना चाहिए। यह अभ्यास हमें सतत दीर्घकाल तक श्रद्धा, ब्रह्मचर्यऔर श्रद्धा पूर्वक करना होता है।

भजनों के क्रम में पंडित लेखराज जी ने तेरी जय ऋषि दयानन्द हमें कर दिए निहाल यह भजन गाया। पंडित भूपेन्द्र जी ने एक वृक्ष पर ईश्वर बैठा जीव उसी को कहना, वेद को पढ़ना पढ़ाना चाहिए वेद को सुनना सुनाना चाहिए। ये भजन गाए।

अतिथि होता --- श्री शान्ति देव जी सोमानी व श्रीमती सुशीला जी सोमानी का विवाह वर्षगांठ प्रात: सपरिवार यज्ञ कर विवाह वर्षगांठ की आहुति देकर मनाया गया। आचार्य कर्मवीर जी ने आशीर्वाद प्रदान किया।

श्री प्रखर प्रताप जी सुपुत्र श्री डॉ. दिलीप जी श्रीमती योगेश्वरी जी राठौर का जन्म दिवस भी प्रात:काल यज्ञ करके दिवस की आहुति देकर मनाया गया। श्री दिलीप जी राठौर व श्री योगेश्वरी जी राठौर का वैवाहिक वर्षगांठ भी ऋषि उद्यान यज्ञशाला में सायं सपरिवार यज्ञ करके वैवाहिक वर्षगांठ की आहुति देखकर मनाया गया। आपने सभी आश्रम वासियों गुरुकुल वासियों व कर्मचारियों तथा सभी आर्यवीरों तथा उनके शिक्षकों के लिए भोजन की व्यवस्था भी की। आचार्य कर्मवीर जी ने आशीर्वाद प्रदान किया।

ऋषि उद्यान के पूर्व कर्मचारी श्री चोखाराम जी का जन्मदिवस प्रात: यज्ञ करके मनाया गया व श्री भगवान देव जी जेठानी का भी जन्म दिवस मनाया गया साथ ही एक आर्यवीर दीविक का भी जन्म दिवस मनाया गया। आचार्य कर्मवीर जी आदि ने आशीर्वाद प्रदान किया।

अजमेर निवासी श्री मुकेश जी अरोड़ा ने भी सपत्नीक अपना जन्म दिवस मनाया। आप अच्छा भजन भी गाते हैं।

सभा कोषाध्यक्ष श्री सुभाष जी नवाल के छोटे भाई श्री दिनेश जी नवाल जी ने सपत्नीक अपनी पुत्री गार्गी

जी का जन्मदिवस जन्म दिवस की आहुति अवसर देकर मनाया।

गुरुकुल ऋषि उद्यान के ब्रह्मचारी भानु प्रताप जी के पिताजी ने भी रु. ५१००/- देकर अपने सुपुत्र श्री भानु प्रताप जी के जन्मदिवस पर अतिथि यज्ञ के होता बने हैं। आप अपने सुपुत्र के जन्म दिवस के दिन ऋषि उद्यान आकर यजमान बने और यज्ञ किया।

ऋषि उद्यान के ब्रह्मचारी भानु प्रताप जी के पिताजी ने भी 5100/- देकर अपने पुत्र भानु प्रताप जी के जन्मदिवस पर अतिथि यज्ञ के होता बने हैं। आप अपने सुपुत्र के जन्म दिवस के ऋषि उद्यान आकर यजमान बने और यज्ञ किया।

आठ दिवसीय आर्य वीर दल का भव्य शुभारंभ

भावी पीढ़ी का भविष्य उज्जवल हो इसके लिए बच्चों को शारीरिक शिक्षा के साथ-साथ भौतिक शिक्षा अति आवश्यक है

उक्त विचार युग प्रवर्तक महर्षि दयानंद सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा व आर्यवीर दल अजमेर के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित दिनांक १४ से २१ मई २०२३ तक ऋषि उद्यान अजमेर में आयोजित आर्य वीर दल के आठ दिवसीय आवासीय शिविर के **प्रथम दिवस** १४ मई को आयोजन के भव्य शुभारंभ के उपलक्ष में आचार्य कर्मवीर ने व्यक्त किए।

आठ दिवसीय शिविर में आसन, प्राणायाम, जूडो कराटे, व्यायाम परीक्षण, चरित्र और संस्कार निर्माण शिविर के अंतर्गत कराया जाएगा

परोपकारिणी सभा के कोषाध्यक्ष श्री सुभाष नवाल ने कहा कि धन गया तो कुछ गया, शरीर गया तो बहुत कुछ गया तथा चरित्र गया तो सब कुछ गया। व्यक्ति संस्कार निर्माण के द्वारा अपने शरीर के साथ-साथ चरित्र का भी निर्माण करें।

विदुषी कुमुदिनी आर्य ने कहा कि माता-पिता अपने बच्चों को शारीरिक, आत्मिक, मानसिक, नैतिक उत्थान के लिए इस शिविर में अवश्य भेजें

उद्घाटन शिविर में मुख्य अतिथि के रुप में श्री देवमुनि, श्री दिनेश नवाल, भजन उपदेशक भूपेंद्र, आचार्य रणजीत, वासुदेव आर्य, रामस्वरूप रक्षक, जागेश्वर प्रसाद निर्मल, नवीन मिश्रा आदि विद्वानों का उद्बोधन हुआ

मुख्य शिक्षक के रूप में श्री सुशील शर्मा, श्री अभिषेक कुमावत, श्री कमलेश पुरोहित, दिनेश आर्य, सुरेंद्र सिंह, हरीश आर्य, आकाश आर्य आदि अपना सहयोग दे रहे हैं। उक्त शिविर का संचालन आर्य वीर दल के जिला संचालक श्री विश्वास पारीक द्वारा किया जा रहा है

शिविर के द्वितीय दिवस के उपलक्ष में प्रांतीय संचालक श्री भवदेव शास्त्री ने अपने उद्बोधन में कहा कि पहला सुख निरोगी काया है, सभी सुखों में सर्वोपरि सुख निरोगी काया है, शरीर को स्वस्थ रखने के लिए अष्टांग योग का अभ्यास करना चाहिए।

वैदिक प्रवक्ता भूपेंद्र आर्य जी ने दोपहर सत्र में गीत भजन के माध्यम से आर्य समाज की महत्ता को समझाया।

आचार्य कर्मवीर जी के सानिध्य में ११ कुंडीय यज्ञ हुआ, यज्ञ की महत्ता को बताते हुए आचार्य जी ने कहा कि यज्ञ वैज्ञानिक पद्धति है, जिससे वातावरण शुद्ध होता है, व्यक्ति शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य की ओर अग्रसर होता है।

जिला संचालक श्री विश्वास पारीक ने शिविरार्थियों को कपालभाति अनुलोम विलोम प्राणायाम का अभ्यास कराया। प्रधान शिक्षक श्री सुशील शर्मा व श्री अभिषेक कुमावत ने जूडो कराटे, दंड बैठक आदि व्यायाम का अभ्यास कराया।

शिविर के तृतीय दिवस पर आचार्य कर्मवीर जी ने ११ कुंडीय यज्ञ करवाया व्यायाम शिक्षक अभिषेक जी ने रस्सा मलखंब पर आर्य वीरों को आसन एवं स्तूप का निर्माण करवाया। प्रथम बौद्धिक सत्र में उत्तर प्रदेश प्रान्त के आर्यवीर दल के प्रांतीय संचालक श्री पंकज आर्य पधारे, अजमेर की जिला संचालक विश्वास पारीक

ने दलबल सहित उनका स्वागत किया, उन्होंने ने बालकों को उनके इस शिविर में होने की महत्ता का एहसास करवाया। उन्होंने समझाया कि आर्य कौन? आर्य ईश्वर पुत्र को कहते हैं। माने जो वैसे ही ईश्वर की आज्ञाओं का पालन करे जैसे एक पुत्र अपने पिता का अनुसरण करता है। ऐसा न करने वाला आर्य नहीं, श्रेष्ठ नहीं। सभी मतावलम्बी आर्य नहीं हो सकते क्योंकि वह ईश्वर की आज्ञाओं का पालन नहीं करते।

द्वितीय बौद्धिक सत्र में स्वामी विद्यानंद ने बालकों को विभिन्न दृष्टांतों के माध्यम से सदाचारी के गुण धर्म समझाए।

तृतीय बौद्धिक सत्र में फरीदाबाद, हरियाणा से आये हुए दिनेश रावत जी ने बालकों को बुद्धि के विषय में बहुत ही विस्तार एवं रोचक तरीके से बताया। उन्होंने विवेचना पूर्वक समझाया कि कैसे बुद्धि मनुष्य लिए सबसे महत्वपूर्ण तत्व है। बालकों ने चर्चा में पूरी सहभागिता करते हुए ५० बार से अधिक बुद्धिमत्ता पूर्वक अपनी बात रखी। बालकों ने बुद्धि की महत्ता, बुद्धि बिगड़ने के उदाहरण, बुद्धि को प्रभावित करने वाले घटक आदि के विषय में चर्चा करते हुए इस बात को सिखाया कि क्यों गायत्री मन्त्र में बुद्धि की ही प्रार्थना की गई है।

शिविर के चतुर्थ दिवस पर आचार्य कर्मवीर ने कहा कि नशा मुक्त समाज से ही सर्वांगीण विकास संभव है।

नशे से व्यक्ति परिवार समाज व देश का ही नुकसान हुआ है, नशे से कई प्रकार के अपराध पैदा होते हैं, नशा मुक्त समाज स्वस्थ समाज की निशानी है।

डॉ वेद पाल जी और सुभाष नवाल जी ने रैली को रवाना किया नशा मुक्त रैली जो सुबह ऋषि उद्यान से महर्षि दयानंद निर्वाण न्यास भिनाय कोठी पहुंची ढाई सौ आर्य वीरो ने भाग लिया।

विश्वास पारीक द्वारा बताया कि शिविर का समापन २१ मई को शाम ६ बजे से ऋषि उद्यान में सार्वदेशिक आर्य वीर दल के संचालक श्री सत्यवीर, डॉ वेदपाल एवं सुभाष नवाल के सानिध्य में किया जायेगा।

शिविर के पंचम दिवस पर आचार्य कर्मवीर जी ने यज्ञोपवित पर अपने उद्‌बोधन में कहा कि यज्ञोपवीत जरूरी क्यों है? यह वैदिक सनातन परंपरा का श्रेष्ठ चिन्ह है। आर्य माने श्रेष्ठ व्यक्तियों का चिन्ह है। रामचंद्र जी कृष्णचंद्रजी आदि सभी इन चिन्हों को धारण करते थे। बाद में विभिन्न मतावलंबी आए और मान्यताएं टूटने लगीं।

श्रेष्ठ वही हो सकता है जिसके पास विद्या है। यज्ञोपवीत विद्या का चिन्ह है। विद्यालय में जाने पर सबसे पहले यज्ञोपवीत संस्कार किया जाता था की आज से यह विद्या पढ़ेगा। सभी विद्यार्थियों का समान अचार विचार एवम् सुविधाएं होती थीं। सभी विद्यार्थी समान रूप से तपते थे। सभी विद्यार्थियों को बिना किसी भेदभाव के दिया जाता था। जो दुख अज्ञान से छुड़ाए वह विद्या कहाती है। यज्ञोपवीत एवम् चोटी विद्यार्थी की पहचान है।

यज्ञोपवीत के नियम सरल है। उनको प्रतिदिन दोनों समय गायत्री मंत्र का जाप करना चाहिए। उनको माता पिता बड़ों का आदर सत्कार सेवा करनी चाहिए। उनको शारीरिक बल बढ़ाने के सभी उपाय करने चाहिए, जैसे कि सुबह जल्दी उठना व् बलवर्धक पदार्थों का ही सेवन करना चाहिए।

यज्ञोपवीत को कान पर रखने का नियम नहीं है, पर मलमूत्र आदि त्यागते समय नीचे ना लगे इसलिए कान पर रख लेते हैं। व्यायाम आदि के समय गले में डाल सकते है

जिला संचालक विश्वास पारीक ने शिविरर्थियों को प्राणायाम का अभ्यास कराया

शिविर के षष्ठ दिवस को कई प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसके तहत देशभक्ति गीत

प्रतियोगिता, चित्रकला, आर्यसमाज नियम, शारीरिक व्यायाम, अनुशासन आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया।

शिविर के सप्तम दिवस को परीक्षा ली गई व प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। शिक्षक विश्वास पारीक, सुशील शर्मा व अभिषेक कुमावत ने व्यायाम का अभ्यास कराया वह कई प्रतियोगिताएं कराई। मुख्य शिक्षकों में श्री सुरेंद्र सिंह, श्री दिनेश आर्य, श्री कमलेश पुरोहित ने सहयोग किया।

शिविर के अन्तिम दिवस समापन समारोह के अवसर पर सार्वदेजिक आर्यवीर दल के प्रधान संचालक श्री सत्यवीर आर्य ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि बच्चों के शारीरिक, आत्मिक, मानसिक व नैतिक उत्थान के लिए आर्यसमाज से जोड़े।

आठ दिवसीय आर्यवीर दल शिविर का समापन भव्य व्यायाम प्रदर्शन के साथ सम्पन्न हुआ

जिला संचालक एवं शिविर संयोजक विश्वास पारीक बताया कि शिविर में भारत के ९ राज्यों से २६० युवकों ने भाग लिया।

वर्तमान में भावी पीढ़ी के उज्जवल भविष्य के लिए बच्चों को चरित्र व संस्कार निर्माण हेतु अभिभावक ऐसे शिविर में अवश्य भेजें जिससे बच्चों का सर्वांगीण विकास हो सके।

उक्त विचार युग प्रवर्तक महर्षि दयानंद सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा व आर्यवीर दल अजमेर के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित दिनांक १४ से २१ मई २०२३ तक ऋषि उद्यान अजमेर में आयोजित आर्य वीर दल के आठ दिवसीय आवासीय शिविर के समापन समारोह के अवसर पर सार्वदेजिक आर्यवीर दल के प्रधान संचालक श्री सत्यवीर आर्य ने व्यक्त किए।

समापन समारोह के मुख्य अतिथि एसडीएम अजमेर महावीर सिंह ने कार्यक्रम से अभिभूत होकर कहा कि बच्चों को शारीरिक शिक्षा के साथ-साथ बौद्धिक शिक्षा भी अनिवार्य हो जिससे नई पीढ़ी बलवान के साथ-साथ विद्वान् भी हो।

परोपकारी पत्रिका के संपादक डॉ. वेदपाल आर्य ने बच्चों को ज्ञानवर्धक पुस्तकें प्रदान करते हुए कहा कि विद्वानों की पुस्तकों का अनुसरण करना चाहिए जिससे नई पीढी सुयोग्य हो।

आर्ष गुरुकुल के आचार्य कर्मवीर ने कहा कि शिविरार्थियों की दिनचर्या में बदलाव आया है तथा बच्चे उत्तम स्वास्थ्य के प्रति सजग हुए हैं।

परोपकारिणी सभा के कोषाध्यक्ष श्री सुभाष नवाल ने कहा कि बच्चे कच्ची मिट्टी की तरह होते हैं, यदि बच्चों को विद्वानों व क्रांतिकारियों की शिक्षा देंगे तो वैसे ही उत्तम विचार ग्रहण कर अनुसरण करेंगे।

आरएएस अधिकारी श्री विकास शर्मा ने कहा कि शिविर में बच्चे आज्ञा पालक, बड़ों का आदर करने वाले, संस्कारित व अनुशासित बने।

आरएसवी स्कूल बीकानेर के सीईओ श्री आदित्य स्वामी ने कहा कि बच्चे अपनी ईश्वर प्रदत्त योग्यताओं का विकास करके स्वयं का, परिवार का, समाज तथा राष्ट्र के उत्थान में सहयोगी बने।

वैद्य चन्द्रकान्त चतुर्वेदी ने आयुर्वेदिक नुस्खों से रोग दूर करने के उपाय बताएं व दैनिक दिनचर्या कैसी हो इस पर विस्तृत जानकारी प्रदान की।

शिविर में आसन, प्राणायाम, जूडो-कराटे, व्यायाम प्रशिक्षण, पिरामिड, लाठी, भाला, तलवार के प्रशिक्षण के अतिरिक्त नशामुक्ति रैली, चित्रकारी प्रतियोगिता, क्रान्तिकारियों पर भाशण प्रतियोगिता, स्वच्छता, चरित्र एवं संस्कार निर्माण आदि का प्रशिक्षण प्रदान किया गया व समापन पर इनका जबरदस्त प्रदर्शन किया गया।

शिविर में विभिन्न प्रतियोगिता में आयोजित की गई जिसके तहत देशभक्ति गीत प्रतियोगिता के वरिष्ठ वर्ग में प्रथम-प्रियांशु त्रिपाठी, द्वितीय-शिवराज व तृतीय-यजन सिंह रहे। कनिश्ठ वर्ग प्रथम-योगेश, द्वितीय-

राहुल व तृतीय– यजिष्ठ रहे।

चित्रकला प्रतियोगिता जो कि आर्यसमाज व महर्षि दयानन्द सरस्वती पर आधारित थी के वरिष्ठ वर्ग में प्रथम–सवाई, द्वितीय–आयुश व तृतीय– अंश रहे। कनिष्ठ वर्ग प्रथम–प्रखर प्रतापसिंह, द्वितीय–अक्षत व तृतीय– रितेश रहे।

आर्यसमाज नियम प्रतियोगिता में प्रथम–अनुव्रत, द्वितीय–शिवराज व तृतीय– नितेश एवं जागृत रहे।

शारीरिक व्यायाम प्रतियोगिता के वरिष्ठ वर्ग में प्रथम–ध्रुव, द्वितीय–प्रियांशु रहे। कनिष्ठ वर्ग प्रथम–यज्ञिष्ठ देव, द्वितीय–ओमप्रकाश रहे।

अनुशासन का पुरस्कार प्रतियोगिता में प्रियांशु त्रिपाठी रहे।

आर्ष गुरुकुल के आचार्य कर्मवीर ने ११ कुंडीय यज्ञ के दौरान आर्यवीरों को प्रशिक्षण प्रदान किया एवं यज्ञोपवित संस्कार करवाकर यज्ञोपवित के लाभ बताये व वैज्ञानिकता को समझाया।

शान्तिदेव सोमाणी एवं मुनि श्रीयज्ञ ने भोजन व्यवस्था में सम्पूर्ण सहयोग किया।

आर्ष गुरुकुल के आचार्य व ब्रह्मचारियों ने शिविर में सम्पूर्ण आवास, भोजन और अन्य सभी व्यवस्थाओं को कुशलतापूर्वक सम्पादित किया।

विद्यार्थियों के लिए नैतिक शिक्षा की पुस्तक का विमोचन हुआ। कोटा के सम्भाग संचालक श्री पीसी मित्तल ने १०,००० पुस्तकें वितरित करवाकर परीक्षा करवाने का संकल्प लिया।

शिविर में व्यायाम का प्रशिक्षण प्रधान शिक्षक सुशील शर्मा व अभिषेक कुमावत व मुख्य शिक्षकों में दिनेश आर्य, सुरेंद्रसिंह, कमलेश पुरोहित, दिनेश रावत, सुनील आर्य आदि को स्मृति चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया गया।

अन्त में कार्यक्रम का संचालन जिला संचालक विश्वास पारीक ने मुख्य अतिथि, आगन्तुकों, भामाशाहों व शिविरर्थियों का धन्यवाद ज्ञापित किया तथा जानकारी दी कि युवतियों का शिविर १९ से २५ जून २०२३ तक आयोजित होगा।

शुल्क वृद्धि की सूचना

परोपकारी के पाठकों बडे भारी मन से सूचित करना पड रहा है कि कागज के मूल्य और छपाई के अन्य साधनों के मूल्यों में बेतहाशा वृद्धि के कारण जनवरी 2023 से सदस्यता शुल्क बढाना पड रहा है। बढी हुई दरें इस प्रकार से हैं –

भारत में

एक वर्ष –	400/–	पांच वर्ष –	1500/–
आजीवन (20 वर्ष) –	6000/–	एक प्रति –	20/–

परोपकारिणी सभा के आगामी शिविर व कार्यक्रम

०१.	दम्पती शिविर	–	२४ से २७ अगस्त–२०२३
०२.	डॉ. धर्मवीर स्मृति दिवस	–	०६ अक्टूबर–२०२३
०३.	साधना–स्वाध्याय–सेवा शिविर	–	२९ अक्टूबर से ०५ नवम्बर–२०२३
०४.	ऋषि मेला	–	१७, १८, १९ नवम्बर–२०२३

कृपया शिविर में भाग लेने के इच्छुक शिविरार्थी पूर्व से ही प्रतिभाग की सूचना दें।

परोपकारिणी सभा अजमेर के नवीन प्रकाशन रियायती मूल्य पर

पुस्तक का नाम	पृ. सं.	वास्तविक मूल्य रुपये	छूट के साथ मूल्य रुपये
ऋग्वेद संहिता	९००	५००	४००
अथर्ववेद संहिता	५५०	४००	३००
ऋग्वेद भाष्य नवम भाग	४००	३००	२२५
पञ्चमहायज्ञ विधि	६२	२०	१५
वैदिक संध्या मीमांसा	१०७	४०	३०
महर्षि दयानन्द सरस्वती का पत्र-व्यवहार (दोनों भाग)	१३९२	८००	५००
महर्षि दयानन्द के हस्तलिखित-पत्र	३३६	२००	१००
कुल्लियाते आर्यमुसाफ़िर (दोनों भाग)	९३८	९५०	६००
डॉ. धर्मवीर का सम्पादकीय संकलन (तीन भाग)	८१४	५००	२५०

यजुर्वेद भाष्य (महर्षि दयानन्द सरस्वती) पृष्ठ संख्या- २१९७, चार भागों का मूल्य = १३००/-
डाक-व्यय सहित विशेष छूट पर उपलब्ध मूल्य = १०००/-

पुस्तकों हेतु सम्पर्क करेंः-दूरभाष - 0145-2460120, चलभाष - 7878303382

VEDIC PUSTKALAYA
0510800A0198064
1342679A
0510800A0198064.mab@pnb

वैदिक पुस्तकालय, अजमेर से क्रय की जाने वाली पुस्तकों की राशि ऑनलाइन जमा कराने हेतु खाताधारक का नाम - वैदिक पुस्तकालय, अजमेर
(VEDIC PUSTKALAYA , AJMER)
बैंक का नाम - पंजाब नेशनल बैंक, कचहरी रोड, अजमेर।
बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या-
0008000100067176
IFSC - PUNB0000800
UPI ID :
0510800A0198064.mab@pnb

विद्या के कोष की रक्षा व वृद्धि राजा व प्रजा करें

वे ही धन्यवादार्ह और कृत-कृत्य हैं कि जो अपने सन्तानों को ब्रह्मचर्य, उत्तम शिक्षा और विद्या से शरीर और आत्मा के पूर्ण बल को बढ़ावें जिससे वे सन्तान मातृ, पितृ, पति, सास, श्वसुर, राजा, प्रजा, पड़ोसी, इष्ट मित्र और सन्तानादि से यथायोग्य धर्म से वर्त्तें। यही कोष अक्षय है, इसको जितना व्यय करे उतना ही बढ़ता जाये, इस कोष की रक्षा और वृद्धि करने वाला विशेष राजा और प्रजा भी है। (सत्यार्थ प्रकाश सम्मुलास ३)

संस्था की ओर से....

क्या आप प्रतिदिन अतिथि यज्ञ नहीं कर पाते? तो आइये, अतिथि यज्ञ के होता बनिये

वैदिक नित्यकर्मों में पञ्चमहायज्ञ अवश्य करणीय कर्म हैं। इन्हीं में से एक है- अतिथि यज्ञ। प्रत्येक गृहस्थ के लिए अतिथि यज्ञ प्रतिदिन करना अनिवार्य है, किन्तु आपको प्रतिदिन अतिथि मिलना संभव नहीं, फिर अतिथि यज्ञ कैसे किया जाय? इसका उपाय है, कुछ राशि प्रतिदिन अतिथि यज्ञ के नाम से निकाल ली जाये और वह राशि एकत्र कर अतिथि सत्कार में गुरुकुल/आश्रम में भोजन आदि के सहयोग में दे दी जाय। इस राशि को प्रदान कर सभा के माध्यम से अतिथि यज्ञ सम्पन्न कर सकते हैं।

सभा की योजना के अनुसार प्रतिवर्ष ५ हजार एक सौ रु. की राशि प्रदान करने वाले उदार यशस्वी दानदाताओं का नाम अतिथि यज्ञ के स्थायी होता सदस्यों में अंकित किया जाता है, ऐसे सज्जनों के नाम परोपकारी में प्रकाशित भी किये जाते हैं।

यदि अपने सामर्थ्य के अनुसार राशि को न्यूनाधिक करना चाहें तो आपकी स्वतन्त्रता है। आप से प्रार्थना है अपना नाम पता और संकल्प लिखकर अवगत करायें और अतिथि यज्ञ के होता बनें। अपनी राशि प्रतिमाह अथवा सुविधानुसार मनीआर्डर/डीडी/चैक/सभा के खाते में ऑनलाइन द्वारा अथवा स्वयं उपस्थित होकर कार्यालय में जमा करा सकते हैं। **आपका दान ८०जी (आयकर की धारा) के अंतर्गत कर मुक्त होगा।**

अनेक 'अतिथि यज्ञ के होता' सदस्यों का आग्रह है, निश्चित तिथि, जन्मदिन, विवाह वर्षगांठ या विशेष अवसर पर वे अपनी ओर से संस्था में भोजन कराना चाहते हैं। ऐसे महानुभावों से निवेदन है कि वे अतिथि यज्ञ के होता के रूप में एक दिन के भोजन व्यय की राशि लगभग पाँच हजार एक सौ रुपये भेजते हुए इच्छित दिन का विवरण सूचित करेंगे, तो उन्हें उनके जन्मदिवस आदि पर परोपकारिणी सभा की ओर से दूरभाष द्वारा आशीर्वाद प्रदान किया जायेगा। यदि उस शुभ अवसर पर वे स्वयं उपस्थित होकर यजमान बनें तो यह सर्वोत्तम होगा।

अतिथि-यज्ञ के होताओं से अनुरोध

जो महानुभाव संकल्प के साथ इस पुनीत कार्य से जुड़े हुए हैं, उनसे हमारा अनुरोध है कि वे अपनी राशि भेजते समय **जन्मतिथि/वैवाहिक वर्षगाँठ आदि व दूरभाष संख्या** सूचित करना न भूलें। साथ ही यह भी अवश्य सूचित करा देवें कि पहले से भिजवा रहे हैं अथवा नया शुरू किया है। राशि जमा करने के पश्चात् दूरभाष द्वारा कार्यालय को अवश्य सूचित करें। दूरभाष - 8890316961

परोपकारिणी सभा के प्रकल्पों में सहयोग करने हेतु बैंक विवरण

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर (PAROPKARINI SABHA AJMER)

१. बैंक का नाम-**भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी चौक, अजमेर।**

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या-**10158172715** **IFSC-SBIN0031588**

email : psabhaa@gmail.com **सूचना देने हेतु चलभाष - 8890316961**

'सत्यार्थ प्रकाश' एवं 'महर्षि दयानन्द जीवन-चरित्र' प्रचार महायज्ञ में आपकी आहुति

महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' ने अविवेक, पाखण्ड, अन्धविश्वासों का दमन कर समाज में एक नई क्रान्ति 'वैचारिक क्रान्ति' को जन्म दिया। अत: परोपकारिणी सभा ने ७ वर्ष पूर्व 'विश्व पुस्तक मेला' दिल्ली में प्रतिवर्ष **'सत्यार्थप्रकाश'** के साथ **'महर्षि का जीवन-चरित्र'** एवं **'आर्याभिविनय'** पुस्तक का वितरण करने की योजना बनाई, जो निरन्तर चल रही है।

एक सैट की छपाई का खर्च लगभग १५० रु. आता है। **५०० से कम प्रतियों पर स्टिकर लगाकर तथा ५०० या अधिक प्रतियों पर दानी व्यक्ति का नाम छपवाकर वितरित किया जाएगा।**

१५० रु. प्रति सैट के अनुसार आप दान देकर अपनी ओर से, अपने नाम से पुस्तक वितरित करा सकते हैं।

अपने दान के साथ 'सत्यार्थप्रकाश वितरण' अवश्य लिख देवें, और साथ ही अपना नाम एवं पता भी। यह दान आप परोपकारिणी सभा के खाते में ऑनलाइन, चैक द्वारा या फिर परोपकारिणी सभा के पते पर मनिऑर्डर भी कर सकते हैं।

न्यूनतम	२० प्रतियाँ	३०००/- रु.
	३० प्रतियाँ	४५००/- रु.
	५० प्रतियाँ	७५००/- रु.
	१०० प्रतियाँ	१५०००/- रु.
	५०० प्रतियाँ	७५०००/- रु.
	१००० प्रतियाँ	१,५०,०००/- रु.

इस प्रकार जितनी अधिक प्रतियाँ बाँटना चाहें, उतनी राशि दूरभाष संख्या के साथ भेज देवें। धन्यवाद।

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर

yono SBI | SBI Payments

MERCHANT NAME : PROPKARNI SABHA
UPI ID : PROPKARNI@SBI

SCAN & PAY

BHIM
SBI Pay
BHIM UPI

सभा प्रकल्पों में सहयोग करने हेतु बैंक विवरण

खाताधारक का नाम

परोपकारिणी सभा, अजमेर

(PAROPKARINI SABHA AJMER)

बैंक का नाम

भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी चौक, अजमेर।

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या-

10158172715

IFSC - SBIN0031588

UPI ID : PROPKARNI@SBI

पुस्तक-परिचय
क्षितीश-ग्रन्थावली

खण्ड-१	**खण्ड-२**	**खण्ड-३**
सिद्धान्त अङ्क	**हिन्दी-हिन्दू-हिन्दुस्तान अङ्क**	**अभिनन्दन अङ्क**
पृष्ठ संख्या ५६९	**पृष्ठ संख्या ४७४**	**पृष्ठ संख्या ६७६**
मूल्य-५००/-	**मूल्य-५००/-**	**मूल्य-५००/-**
खण्ड-४	**खण्ड-५**	**खण्ड-६**
यात्राएं, उपन्यास एवं हास्य विनोद अङ्क	**ललित साहित्य अङ्क दैनिक हिन्दुस्तान के अग्रलेख**	**आर्यजगत् के अग्रलेख अङ्क**
पृष्ठ संख्या ४४०	**पृष्ठ संख्या ४६५**	**पृष्ठ संख्या ५३७**
मूल्य-५००/-	**मूल्य-६५०/-**	**मूल्य-६००/-**

खण्ड-७
राष्ट्रीयता अङ्क
पृष्ठ संख्या-५८४
मूल्य-७००/-
सम्पादक द्वय- डॉ. वेदव्रत अलोक एवं श्रीमती विश्वास
प्रकाशक-हितकारी प्रकाशन समिति-हिण्डौन सिटी, (राजस्थान)

भारत देश की संस्कृति सर्वोपरि आदिकाल से रही है। इसकी गरिमा, परम्परा, सिद्धान्त, धार्मिक, आध्यात्मिक आधार पर देन रही है। वाल्मिकि रामायण काल से वर्तमान समय तक, कवियों, लेखकों की उद्घोषणाएं, प्रेरणा कर्त्तव्यपथ का पालन, सह्रदयता, भ्रातृत्व प्रेम, निकटता, व्यवहारिकता पर प्रकाश डालने का प्रयास किया है। इस कारण चेतना, जागृति, धार्मिकता, सामाजिकता, एकता, स्नेह की छाया आज भी आद्योपान्त झलक रही है। इस कारण हम गौरवान्वित होते हैं कि हमारे महापुरुषों (पुरुष व नारी शक्ति) का कितना योगदान रहा है और हम पीढ़ी दर पीढ़ी उस पर चलने का सतत प्रयास करते हैं।

ऋषि मनीषियों ने जो मार्ग प्रशस्त किया है हम उनके आदर्शों पर अपने को ढालने की चेष्टा करते हैं। उनके आदर्श कार्यकलापों का अनुसरण करते हैं। इस कारण हमारी प्राचीन संस्कृति आज भी फल फूल रही है। नई पीढ़ी को भी उसी ओर ढालने का प्रयास किस जाता है। इसका श्रेय हमारे गुरुजन, माता-पिता या मार्गदृष्टा को जाता है। आज के चकाचौंध के युग में हमारा साहित्य, ज्ञान, ईश्वर चिन्तन आदि में हमें सही मार्ग को अपनाने का अवसर मिलता है।

इसी कड़ी में डॉ. विवेक आर्य व डॉ. वेदव्रत आलोक की लेखनी क्षितीश वेदालंकार ग्रन्थावली के सम्पादन में समर्पित हुई। उन्होंने सात भागों में विभाजित कर इस साहित्य सृजन में नई जागृति, चेतना, नई चन्द्रकिरण स्थापित

की। प्रत्येक खण्ड का अवलोकन करने से साहित्य के प्रति अगाढ़ प्रेम, सम्पूर्णता, हमारे आदर्श व कर्त्तव्यों का भान होता है। इस ग्रन्थमाला में भी इसी तरह से खण्ड एक में अनेक विषय हैं- १. निजाम की जेल में २. आप्त राष्ट्र पुरुष (महर्षि दयानन्द) ३. दिव्य दयानन्द ४. आर्यसमाज की विचार धारा ५. ईश्वर-संसार के प्रसिद्ध वैज्ञानिकों की दृष्टि से- संकेत देकर क्रान्ति, देश की हलचल, आर्य की विचारधारा क्या है- ईश्वर के प्रति सोच को उजागर किया है।

खण्ड-२ हमारी एकता व अखण्डता पर पूर्ण प्रकाश डाला है। जाति भेद, हिन्दी की आवश्यकता, भारत हिन्दू राष्ट्र घोषित हो भावों का प्रवाहित किया है। कश्मीर समस्या पर विचार- वैसे ३७० की धारा कई नियम हटने परिवर्तन आयेगा। लेखक के अपने विचार अनुकूल है।

खण्ड-३ में चयनिका व राष्ट्रीय पत्रकारिता पर स्व विचारों की प्रस्तुति एवं विद्वानों के संस्मरण लेख कवितायें व उनका छाया रूप प्रस्तुत किया है।

खण्ड-४ में यात्राएं-उपन्यास एवं हास्य विनोद-प्रसङ्ग पर समाज साहित्य सेवा पर अविरल लेखनी चली है।

खण्ड-५ में ललित साहित्य अङ्क फिर इस अन्दाज से बहार आई, ओ मेरे राजहंस, देवता कुर्सी के पर निर्भीक एवं प्रेरणादायी विचारों की प्रस्तुति है।

खण्ड-६ में आर्यसमाज के अग्रलेख अङ्क - इसमें हिन्द की चादर में दाग, राष्ट्रीय एकता की बुनियादें, असलियत क्या है? पर लेखक के अनुपम, उत्कृष्ट लेख प्रदान किये हैं। पाठकों के लिए सुदृढ़ सोच, दृष्टिकोण है।

खण्ड-७ में राष्ट्रीयता अङ्क इसमें उन लेखों को स्थान दिया है जो उनके दिवगंत होने के उपरान्त 'राजनीति नहीं राष्ट्रनीति नाम से प्रकाशित' आज के लिए भी अनुपम धरोहर और वास्तविकता का ज्ञान प्राप्त होता है।

लेखक ने अथक प्रयास व स्वावलम्बन कर २०२२ में इसको सात खण्डों में पुन: प्रकाशित कराया है। इससे हमारा गौरव व आदर्श, लेखनी के गुण प्रकट होते हैं। जनमानस पाठक इनका पठन कर लाभ उठावें। लेखका का प्रयास सफल हो।

परोपकारी ग्राहकों हेतु आवश्यक सूचना

परोपकारी के अनेक सदस्यों की यह शिकायत रहती है कि उन्हें पत्रिका प्राप्त नहीं हो रही है। रजिस्टर्ड डाक से पत्रिका भेजने पर डाक व्यय बढ़ जाता है। सदस्यों से निवेदन है कि जो रजिस्टर्ड डाक से पत्रिका मंगवाना चाहते हैं, वह निम्नानुसार डाक व्यय सभा के खाते में अग्रिम रूप से जमा करके कार्यालय को सूचित कर दें। रजिस्टर्ड डाक का व्यय (पत्रिका शुल्क के अतिरिक्त) निम्न प्रकार है-

१. प्रत्येक अंक (वर्ष भर २४ अंक) रजिस्टर्ड डाक से मंगाने पर - डाक व्यय - १०००/-

२. एक मास के दो अंक- एक साथ मंगाने पर वार्षिक - डाक व्यय - ५००/-

३. एक वर्ष के २४ अंक- एक साथ मंगाने पर - डाक व्यय - १००/-

बैंक विवरण

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर (PAROPKARINI SABHA AJMER)

१. बैंक का नाम-**भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी चौक, अजमेर।**

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या-**10158172715** **IFSC-SBIN0031588**

email : psabhaa@gmail.com **सूचना देने हेतु चलभाष - 8890316961**

समापन समारोह पर सुशोभित मंच

नशा मुक्ति रैली के दौरान भिनाय कोठी में आर्यवीर

जूडो एवं सूर्यनमस्कार का प्रदर्शन करते आर्यवीर

आर जे/ए जे/80/2021-2023 तक प्रेषण : १५-१६ जून २०२३ आर.एन.आई. ३९५९/५९

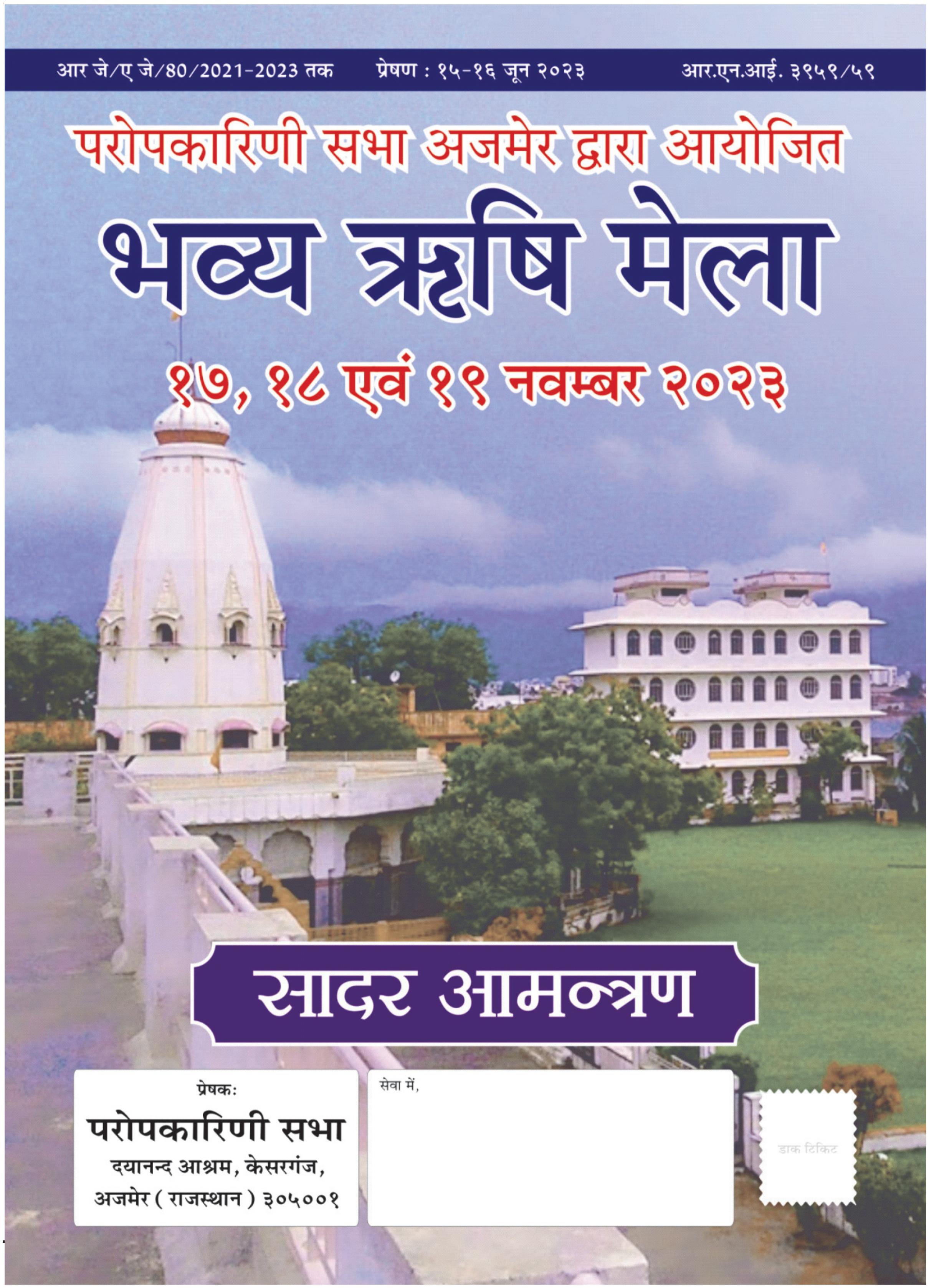

परोपकारिणी सभा अजमेर द्वारा आयोजित

भव्य ऋषि मेला

१७, १८ एवं १९ नवम्बर २०२३

सादर आमन्त्रण

प्रेषकः
परोपकारिणी सभा
दयानन्द आश्रम, केसरगंज,
अजमेर (राजस्थान) ३०५००१

सेवा में,

डाक टिकिट